Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 22 अंक 03 30 मार्च, 2022 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

जन-चेतना एवं राजनैतिक क्रांति के सूत्राधार-ताऊ देवीलाल

06 अप्रैल पुण्य तिथि पर विशेष

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

जन नायक ताऊ देवीलाल पूरे राष्ट्र में विशेष तौर से उत्तरी भारत में जन चेतना व राजनैतिक क्रांति जागृत करने के एक मात्र सुत्राधार बनकर उभरे। उनका सफरनामा अल्पायु से ही ताउम्र संघर्ष व चुनौती पूर्ण मार्ग से होकर गुजरा है। मात्र 16 वर्ष की आयु में ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आह्वान पर अपनी शिक्षा बीच में छोडकर भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े और संघर्ष करते हुए अपने एकमात्र सार्वजनिक हित के लक्ष्य को साधने के लिए उन्होने अपनी परंपरागत हजारों एकड़ कृषि भूमि, भूमिहीन कामगारों व खेतीहर मजदूरों के सुपुर्द कर दी। समाज को राजनैतिक तौर से जागरूक करने व राजनैतिक चेतना को सुदृढ़ करने के लिए सामाजिक तकनीकीकरण और वर्गीकरण के दो अद्भुत सामाजिक संसाधनों पर अमल करते हुए जनता के सामुहिक सहयोग से न्याय युद्ध, यातायात अवरूद्ध करने, पैदल यात्रा आदि के शांतिपूर्ण संघर्ष से प्रशासन व सरकार को जन कल्याण के प्रति जागरूक किया। चौधरी देवीलाल का लंबा राजनैतिक दौर सदैव जन कल्याण व राजनैतिक जनक्रांति के संघर्ष से परिपूर्ण रहा है और सत्ता में रहते हुए व सत्ता से बाहर भी जनता जनार्धन के सहयोग अपने इन अनुकरणीय उद्देश्यों के प्रति संघर्ष करते रहे।

संयुक्त पंजाब के मुख्यमंत्री स्वर्गीय सरदार प्रताप सिंह कैरों से हरियाणा राज्य के अस्तित्व को लेकर मतभेद होने पर उनके कट्टर विरोधी बन गए व कांग्रेंस से 39 साल के राजनैतिक संघर्ष के बाद पार्टी को अलविदा कह दिया और जनता जनार्धन के बीच सामाजिक जन चेतना व राजनैतिक क्रांति लाने के लिए निकल पड़े। हरियाणा वासियों के हक के लिए जबरदस्त पैरवी की और स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी को उनकी अलग हिंदी भाषी क्षेत्र की मांग को मानना पड़ा, जिस कारण 1 नवंबर 1966 को हरियाणा प्रांत को अलग से राज्य का दर्जा दिया गया और वर्ष 1974 में रोड़ी (सिरसा) से विधायक चुने गए। वर्ष 1975 में प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी द्वारा प्रजातांत्रिक मूल्यों व जनता के राजनैनिक अधिकारों की अनदेखी कर तानाशाही रवैये के विरूद्ध राष्ट्र के कोने–कोने में जाकर सरकार की जन विरोधी नीतियों का भंडाफोड़ करके जनता में राजनैतिक जनक्रांति लाने के लिए पुरजोर संघर्ष किया और 19 मास तक गुडगांवा जेल में रहे, लेकिन अपना संघर्ष जारी रखा। उनका मानना था कि राजनैतिक अधिकार संघर्ष से मिलते हैं, मांगने से नहीं। अपने राजनैतिक दौर में हमेशा गुरू गोविंद सिंह की प्रेरणादायक वाणी "कोऊ किसी को राज ना देह है, जो लेह निज बल से लेह है" पर अमल करते हुए राजनैतिक चेतना व कल्याणकारी सोच की राजनीति के लिए संघर्ष करते रहे।

जन साधारण के सहयोग व संघर्ष से राजनैतिक क्रांति लाकर वर्ष 1977 में जनता पार्टी के हरियाणा में एकमात्र नेता उभरकर आगे आए और शेरे हरियाणा के नाम से प्रसिद्ध हुए व मुख्यमंत्री बने। विधानसभा की 90 सीटों में से 85 सीटों पर विजय प्राप्त की जिनमें से 17 आरक्षित सीटों पर विभिन्न वर्गों के उम्मीदवारों को विजय दिलवाई और लोकसभा की सभी 10 सीटों पर जीत हासिल की। अपने शासनकाल में जन साधारण के लिए कल्याणकारी नतियों व राजनैतिक जागरूकता को विशेष तौर से जारी रखा और जनहित के लिए अनेकों कल्याणकारी योजनाएं – गरीब, मजदूर, किसान, दुकानदार के दस हजार रूपये तक के कर्जे माफ, किसानों को ओलावृष्टि का मुआवजा, व्यापारी भाईयों के लिए 59 वस्तुओं पर सेल्सटैक्स कम, इंस्पैक्टरी राज से छुटकारा, प्रदेश के वृद्धों को 100 रुपये सम्मान पैंशन, गांव–गांव में हरिजन चौपाल, बेरोजगार युवकों को बेरोजगारी भत्ता, किसानो को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य, सडक के किनारे खड़े वृक्षों में किसानों को आधा हिस्सा, ट्रैक्टर का रजिस्ट्रेशन टैक्स, साईकिल टोकन टैक्स, रेडियो पर लाईसैंस पूर्ण तौर पर समाप्त, गांव–गांव में रिंग बांध बनाकर बाढ पर नियंत्रण, 24 घंटे बिजली, पानी का प्रबंध, किसानों को 6.5 एकड़ भूमि का मालिया माफ, इंटरव्यु पर जाने वाले बेरोजगार युवकों को मुफ्त बस यात्रा, हरिजन के घर पर पहला बच्चा पैदा होने पर 300 रूपये, दूसरा बच्चा होने पर 500 रूपये की ग्रांट राशि, हरिजन विधवा की लडकी की शादी के लिए सरकार द्वारा 5100 रूपये कन्यादान के रूप में सहायता, खानाबदोश व घुमंतु लोगों के बच्चों द्वारा स्कूल जाने पर प्रतिदिन एक रूपया की व्यवस्था, गावों तथा शहरों में शुद्ध पीने के पानी की व्यवस्था, मार्केटिंग बोर्ड द्वारा गांव–गांव में सडकों का निर्माण, सरकारी रोजगार प्राप्त करने हेतू उम्मीदवारों की अधिकतम आयु सीमा 30 वर्ष से बढ़ाकर 35 वर्ष करना, काम के बदले अनाज की योजना, गांव व शहर के विकास के लिए अद्भुत मैचिंग ग्रांट योजना, पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए नंबरदारी का पद सुरक्षित करना, नई कृषि नीति की घोषणा, खुले जनता दरबार, बड़े–बड़े पांच सितारा होटलों में चौपाल की व्यवस्था आदि शुरू की जिनका आज समस्त राष्ट्र में अनुकरण किया जा रहा है,

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

जो कि उनका ऐतिहासिक कल्याणकारी व जनक्रांति की सोच का परिणाम है।

अपनी दूरदर्शी जन क्रांतिकारी राजनैतिक छवि की बदौलत वर्ष 1986 व 1987 में हरियाणा विधानसभा के निर्विरोध नेता रहे। वर्ष 1982 में कांग्रेंस की भ्रष्ट व खरीद फरोख्त की राजनीति की वजह से मुख्यमंत्री का पद छीन लिया गया लेकिन 1987 के चुनाव में भ्रष्ट राजनीतिज्ञों को करारा जबाब देकर विधानसभा की 85 सीटें जीतकर एक एतिहासिक मिशाल कायम करते हुए कांग्रेंस का सफाया किया और मुख्यमंत्री बने। ग्रामीण क्षेत्र के विकास के मुख्य स्त्रोत हरियाणा खादी बोर्ड की प्रदेश में प्रथम बार स्थापना की क्योंकि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तरह उनकी विशेष सोच थी कि ग्राम विकास के बना राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता। किसान, कामगार, काश्तकार व छोटे व्यवसायी वर्ग के कल्याण व उत्थान के लिए कर्जा माफी, आसान किस्तों पर ऋण उपलब्ध करवाने, खेती के लिए सस्ते दामों पर खाद, बीज उपलब्ध करवाने, बिजली–पानी की प्रयाप्त व्यवस्था आदि करवाकर राष्ट में एक नई जन कल्याणी व्यवस्था शुरू की। उनकी एक विशेष कल्याणकारी सोच थी कि राष्ट्र के विकास व कल्याणकारी जनक्रांतिकारी राजनैतिक व्यवस्था के लिए किसान का बेटा प्रधानमंत्री व दलित का बेटा राष्ट्रपति होना आवश्यक है। वर्ष 1987 में राजस्थाान के सीकर व हरियाणा में रोहतक से एक साथ सांसद चुने गए और देश के उप प्रधानमंत्री रहे। वर्ष 1989 में उन्होने सैंट्रल मोटर व्हीकल अधिनियम 1989 के नियम 7 के तहत प्रावधान करवाकर किसान के ट्रैक्टर को ट्रांसपोर्ट व्हीकल की श्रेणी में रखवाकर हर प्रकार के कर से मुक्त करवाया लेकिन वर्तमान केंद्रीय सरकार इस अधिनियम में संशोधन करके किसान के कृषि ट्रैक्टर को ट्रांसपोर्ट व्हीकल यानि कि कामर्शियल व्हीकल की श्रेणी में लाना चाहती है जबकि चौधरी देवीलाल का मानना था कि किसान का ट्रैक्टर कृषि कार्य के लिए उनका गड्डा है। राष्ट्र में नई राजनैतिक जनक्रांति लाने व जन साधारण के कल्याण हेतू कल्याणकारी व निष्पक्ष सत्ता स्थापित करने के लिए प्रधानमंत्री पद की पेशकश को ठुकराकर स्वर्गीय श्री वी. पी. सिंह व बाद में स्वर्गीय श्री चंद्र शेखर को प्रधानमंत्री बनवाकर निस्वार्थ व त्याग की ऐतिहासिक मिशाल पेश की और किंगमेकर कहलाए। उनका ये मानना था कि सत्ता सुख भोगने के लिए नहीं अपितु जन कल्याण को समर्पित होनी चाहिए।

जनकल्याण व निष्पक्ष राजनैतिक व्यवस्था के अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतू सदैव समाज के सभी वर्गों व जन साधारण को साथ लेकर स्वच्छ राजनीति की। उन्होने ग्रामीण पृष्ठभूमि के हर वर्ग के व्यक्ति को राजनीति में प्रवेश करवाकर सभी वर्गों को एक मंच पर लाकर क्रांतिकारी राजनीति का श्री गणेश किया और उपेक्षित हो रहे किसान, कामगार, काश्तकार वर्ग को अपने हितों की पैरवी करने के लिए राजनीति में उभरकर आने को प्रेरित किया। हरियाणा में गुहला से श्री दिल्लूराम बाजीगर, नारायणगढ से लाल सिंह गुर्जर, दलित वर्ग से बड़ौदा से डा० कृपाराम पुनिया, जुंडला से रिसाल सिंह, कलायत से श्री बनारसी दास, बवानी खेड़ा से श्री जगन्नाथ, रतिया से श्री आत्मा राम गिल, गुजरात से चिमन भाई पटेल, उत्तरप्रदेश से श्री मुलायम सिंह यादव, रामनरेश यादव, बिहार से श्री कर्पूरी ठाकुर, लालु प्रसाद यादव, आंध्रप्रदेश से श्री एन. टी. रामाराव, कर्नाटक से श्री देवगौड़ा, पंजाब से सरदार प्रकाश सिंह बादल आदि को राजनीति में सक्रिय सहयोग दिया और समस्त राष्ट्र में क्रांतिकारी राजनति की नींव रखी। उन्होने कभी भी जातिवाद, छल कपट व भेदभाव की राजनीति नहीं की। हरियाणा के इतिहास में पहली बार सैनी वर्ग के श्री मनोहर लाल को महेंद्रगढ़ से सांसद बनवाया। बाद में 1980 में कुरूक्षेत्र से उनको सांसद विजयी करवाया। श्री गुरदयाल सिंह सैनी, श्रीमति कलाशो देवी जब तक चौधरी देवीलाल के साथ रहे, कुरूक्षेत्र लोकसभा क्षेत्र से सैनी बिरादरी का प्रतिनिधित्व कायम रहा। हालांकि इस क्षेत्र के लगभग 1 लाख मतदाताओं में 4 लाख से अधिक वोटर जाट समाज से थे। इसी प्रकार करनाल लोकसभा क्षेत्र से कश्यप जाति से संबंधित उमेद सिंह को पहली बार सांसद प्रत्याशी बनाया। बाद में इंद्री हल्के से डा० अशोक कश्यप को विधायक बनवाया। उनकी स्पष्ट वादिता व निष्पक्षता का उनके विरोधी भी लोहा मानते थे। वे कहते थे कि मुझे जब भी नीचा दिखाने की कोशीश की गई, मैं अपनी असली ताकत जो भारत के ग्रामीण लोगों में निहित है, के सहयोग से अधिक ताकतवर होकर उभरा हूं। वर्ष 1979 में जब उनको मुख्यमंत्री पद को पाने में अपदस्थ किया गया तो उन्होने कहा कि एक सरमायेदार ने किसान की झोपड़ी फूंकी थी, मैनें उनके महल को आग लगा दी और श्री मोरारजी देसाई को प्रधानमंत्री के पद से हटाने की अह्म भूमिका निभाई। उनकी यह अह्म क्रांतिकारी सोच थी – "लोकराज लोकलाज से चलता है"। मैं एक ग्रामीण हूं और चालाकी की राजनीति एक ग्रामीण मर्यादा के खिलाफ है तथा जन कल्याणकारी व्यवस्था के हित में नहीं है। इसलिए क्रांतिकारी व जन

कल्याणकारी शासन की व्यवस्था के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में खुले दरबार लगाकर प्रशासन व पुलिस तंत्र की जनता के प्रति जबाबदेही जिम्मेवारी सुनिश्चित करके स्वच्छ प्रशासनिक व्यवस्था की शुरूआत की।

अपनी जन कल्याणकारी व जनक्रांतिकारी सोच की बदौलत उन्होने अपने शासनकाल में हरियाणा में कृषि व किसानी पर आधारित सभी जातियों के शैक्षणिक व आर्थिक विकास के लिए जस्टिस गुरनाम सिंह आयोग की स्थापना की और जाट, जट–सिक्ख, रोड़, त्यागी, बिश्रोई, मेव, सैनी, गुर्जर व राजपूत 9 जातियों को ओ बी सी में आरक्षण दिलवाया जोकि उनकी निष्पक्षता व सर्वजन कल्याणकारी छवि को स्पष्ट करता है।

लेखक के नीजि अनुभव हैं कि वर्ष 1978 में लेखक को हरियाणा सरकार में सहायक पुलिस महानिदेशक के तौर पर चौधरी देवीलाल के मुख्यमंत्री काल में उनके नीजि सम्पर्क में रहने का अवसर मिला। इसी वर्ष पूर्व लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की करारी हार के बाद हुए लोकसभा उप चुनाव में करनाल लोकसभा क्षेत्र से जनता पार्टी के उम्मीदवार श्री महेंद्र सिंह लाठर व कांग्रेस के श्री चिरंजीलाल शर्मा के चुनाव अभियान के समय पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी एक मुकदमें में जेल हिरासत से रिहा हुई और चुनाव अभियान में कूद पड़ी। उनका पहला दौरा करनाल लोकसभा क्षेत्र का था और उनकी पहली जनसभा पानीपत में हुई। पूरा राष्ट्र विशेषकर हरियाणा, पंजाब उनके प्रति प्रथम राजनैतिक रूझान देखने व जानने का इच्छुक था। ताऊ देवीलाल ने बतौर मुख्यमंत्री लेखक को निर्देश दिया कि पानीपत में होने वाली श्रीमति इंदिरा गांधी की जनसभा की पूरी जानकारी मेरे को व लाला जगतनारायण को पानीपत विश्राम गृह में तुरंत दी जाये। मैने जन सभा की रिकार्डिंग करवाई व रैस्ट हाउस पहुंचा, जहां पर दोनों उपस्थित थे और कहा "थे सुनाओं लोगों का क्या रूझान था। मैने टेप रिकार्ड आन किया और आन होते ही तालियों की गडगड़ाहट व जन समूह का नारा –"इंदिरा गांधी आगे बढ़ो, हम तुम्हारे साथ हैं" सुनते ही कहा लाला जी इंदिरा खत्म नहीं हुई अभी भी लीडर है, जिससे स्पष्ट है कि वे राय देने में भी पूर्णतया स्पष्ट व निर्भिक थे। इसी प्रकार मुझे उनके साथ का एक और अवसर याद है जो कि उनकी जन कल्याणकारी, क्रांतिकारी भाावना के साथ–साथ जनहित में तुरंत निष्पक्ष व बेझिझक कार्यवाही को दर्शाता है। वर्ष 1978 के दौरान ही जब उत्तरी हरियाणा में गन्ने की बंपर पैदावार हुई थी और केंद्र सरकार की किसान विरोधी नीतियों के कारण गन्ना 4 रूपये क्विंटल तक कौडियों के भाव बिक रहा था और गन्ने की धीमी अदायगी व उगाही के कारण किसानों में घोर निराशा थी। यमुनानगर से किसानों का एक शिष्टमंडल मुख्यमंत्री चौधरी देवीलाल को मिला व अपनी समस्या बताई कि गन्ना खेतों में खराब हो रहा है और शुगर मिल बंद हो चुका है। उन्होने तुरंत सरस्वती गन्ना मिल यमुनानगर के स्वामी श्री डी. डी. पुरी को फोन कर कहा कि जब तक किसान के खेत में गन्ने की एक भी टोटी (टुकड़ा) शेष है, आप शुगर मिल बंद नहीं करोगें। यह उनकी किसान, काश्तकार के हित के प्रति चिंता को व्यक्त करता है जबकि इससे पूर्व की चौधरी भजनलाल सरकार द्वारा गन्ना उगाही व मात्र कुछ रेट बढ़ाने के मुद्दे पर किसानों पर लाठीचार्ज व अपराधिक मुकदमें दर्ज किए गए थे। जब चौधरी देवीलाल को यह आभास हुआ कि किसान, कामगार बढ़ी कृषि लागत व प्रकृति की मार से घाटे में जा रहा है तो तुरंत किसान, कामगार व छोटे दुकानदारों के कर्ज माफ करने की एक ऐतिहासिक पहल की, जो कि एक क्रांतिकारी मुख्यमंत्री ही कर सकता है और बाद में इस योजना का किसान हित में समस्त राष्ट्र में अनुशरण किया गया।

ताऊ देवीलाल एक ऐसी अद्वितीय प्रतीभा के स्वामी थे जो आज तक किसी नेता के पास नहीं हैं। वे हरेक के दुःख को अपनाकर उसकी भरपूर मद्द करते थे और वे हर समस्या की जड़ तक जा कर उसका निवारण करते थे। बहुत से दिग्गज़ नेताओं ने उनकी तरह बनने के प्रयास किये परन्तु वे विफल रहे क्योंकि वो मसीहा देवीलाल जी की तरह उनसे मन से नहीं जुड़ पायें।

निसंदेह यह बहुत गर्व एवं सम्मान की बात है कि चौधरी देवीलाल एक ऐसी अकाल्पनिक एवं अद्भुत प्रतिभा के स्वामी थे जिन्होने अपना संपूर्ण जीवन जनता जनार्धन के मूल अधिकारों के हित की लड़ाई के लिए समर्पित कर दिया तथा सदैव ही उनके पथ को उजागर किया और मार्गदर्शन के लिए संघर्षशील रहते थे। ऐसा करते–करते 6 अप्रैल 2001 को संघर्षशील धरतीपुत्र चौधरी देवीलाल की आत्मा पवित्र धरती में विलीन हो गई और आज आम आदमी लगातार टकटकी लगाए अपनी गंभीर समस्याओं के समाधान के लिए किसी और धरतीपुत्र के पुनः उद्गम होने की मृगतृष्णा में है।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

महान राष्ट्रवादी व धर्मनिरपेक्ष जाटों का प्राचीन इतिहाकारों द्वारा इतिहास छुपाया जाना

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत)

जो भरा नहीं है भावों से जिसमें बहती रसधार नहीं।
वो इन्सान नहीं वो जाहिल है जिसमें अपनी कौम का प्यार नहीं।।

इतिहास में जगह–जगह प्रमाण है कि भारत को सोने की चिड़िया भी कहा गया है जोकि भारत का स्वर्ण युग कहलाया है। यह स्वर्ण युग के नाम से जाना गया है और यह सारा समय जाट वंश के राजाओं का ही समय है। भारतवर्ष का यह स्वर्ण युग केवल जाट वंश के राजाओं के कार्यकाल में ही संभव हो पाया है। भले ही पौराणिक ब्राह्मणवाद ने जाटों के इतिहास को बदसूरत करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। एक से बढ़कर एक षड़यंत्र किया। जाटों को मलेच्छ, शुद्र और कुजात तक लिखने में प्रहेज नहीं किया। विष्णु पुराण व पद्म पुराण में जाटों को शुद्र लिखा गया है और चचनामा में जाटों को चाण्डाल जाति लिखा गया है। यहां तक भी ये पाखण्डी नहीं रूके और इन्होंने एक षड्यंत्र के तहत सन् 1932 ई. में लाहौर हाईकोर्ट के एक शादीलाल नामक बनिया न्यायधीश द्वारा जाटों को शुद्र जाति घोषित करवाया गया था, लेकिन वे यह क्यों भूल जाते हैं कि जैन ग्रंथों में ब्राह्मणों को तुच्छ ब्राह्मण लिखा गया है। कालिदास साहत्यि में भी महाब्राह्मण एक विदुषक या महामूर्ख के लिए प्रयोग किया गया है। इसे निकृस्त ब्राह्मण अर्थात महापात्र या गुरिया/मुर्ख ब्राह्मण भी कहा गया है।

ब्राह्मणों द्वारा हमेशा जाटों के इतिहास को नहीं लिखा गया क्योंकि प्राचीन समय में एतिहासिक व अन्य सभी प्रकार के लेखन कार्य ब्राह्मण ही किया करते थे और ब्राह्मणों ने जाटों का इतिहास मिटाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। ये तो कुछ इतिहासकारों की हम पर कृपा रही कि ब्राह्मण हमारा इतिहास शतप्रतिशत मिटाने मं सफल नहीं हुये। ब्राह्मणों ने तो एतिहासिक सबूत मिटाने के भरसक प्रयत्न किए। इसके अतिरिक्त देव संहिता का श्लोक नं. 17 इस स्थिति को बिलकुल स्पष्ट कर देता है कि जाट जाति का इतिहास अत्यन्त आश्चर्यजनक है व रहस्यमय है। इस अतिहास के प्रकाशित होने पर देव जाति पर गर्व होता है। यह देव जाति पौराणिक ब्राह्मणवाद है और जाट इतिहास के प्रकाशित होने पर इस देव जाति के झूठ और पाखण्डवाद और ब्राह्मणों द्वारा लिखित इतिहास का भाण्डाफोड होता है। यही मुख्य कारण हैं कि कुछ षड्यन्त्रकारी ब्राह्मण इतिहासकारों द्वारा इतिहास से जाटों का नाम लुप्त करने का प्रयास किया जाता रहा है। यहां पर डॉ० इकवाल का एक शेर याद आता है।

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा"

महान सम्राट अशोक से लेकर हर्षवर्धन तक सभी राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी और प्रचारक रहे हैं। ये सभी जाट राजा थे। मौर्य वंश के सभी राजा जाट थे और सम्राट अशोक तो सबसे पराक्रमी और महान थे। सम्राट विक्रमादित्य जैसा न्यायप्रिय और धर्मनिर्पेक्ष राजा आज तक पृथ्वी पर पैदा ही नहीं हुआ। वे भी पंवार गोत्र के जाट वंशी राजा थे। जाटों ने कभी इतिहास नहीं लिखा, जाटों ने हमेशा इतिहास बदले हैं। यदि जाट अपना इतिहास लिखते तो जाटों का इतिहास और भी खूबसूरत होता। सम्राट विक्रमादित्य पंवार जैसा सम्राट इतिहास में ढुढ़ने से भी नहीं मिलेगा जिसने रोम के शासक जुलियस सीजर को बंदी बनाकर उज्जैन शहर की सड़कों पर नंगे पैरों घुमाया था। विशाल भारत के अतिरिक्त जिसका साम्राज्य मध्यएशिया, यूरोप और अरब देशों तक फैला हुआ था। ऐसे महान सम्राट का इतिहास में कहीं नाम ही नहीं है। जहरीले नागों ने इस महान सम्राट का नाम इतिहास से मिटा दिया। हमें कुछ इतिहासकारों का शुक्रगुजार होना चाहिए जिन्होंने इनको इतिहास के पन्नों में कहीं जीवित रखा। सम्राट विक्रमादित्य पंवार गोत्र के जाट राजा था और आगे चलकर ग्याहरवीं शताब्दी में राजा भोज व जगदेव सिंह पंवार भी सम्राट विक्रमादित्य के ही वंशज थे। वे भी बड़े शूरवीर और पराक्रमी शासक हुए थे। इन्होंने भी अपने समय में बुलन्दियों को छुआ था। इसके उपरान्त 78 ई० में सम्राट कनिष्क ने विंध्याचल पर्वत से लेकर सारे उत्तरी भारत पर 42 वर्ष तक राज किया, जिसकी राजधानी पेशावर थी। उसने भी बौद्ध धर्म फैलाने में बहुत कार्य किया। सम्राट कनिष्क भी कासवां गोत्र के जाट सम्राट थे। 300 वर्ष तक नागवंशी जाट राजाओं ने भारत पर राज्य किया। इनका वंश भी पराक्रमी व शक्तिशाली था। इसके उपरान्त 240 ई० में श्रीगुप्त ने गुप्त वंश की नींव रखी। यह वंश धारण गोत्र का जाट वंश था। इस वंश ने लगभग 450 वर्ष तक भारत पर शासन किया और श्रीगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, पुरूगुप्त, कुमारगुप्त द्धितीय, बुद्धगुप्त, कृष्णगुप्त, कुमारगुप्त तृतीय, माधवगुप्त व जीवितगुप्त तक अनेक पराक्रमी सम्राट इस वंश ने भारत को दिए जिन्होंने अपने पराक्रम, वैभव और बुद्धिमता से भारत को सोने की चिड़ियां, विदेशीयों द्वारा कहने पर मजबूर कर दिया। गुप्त काल को भारत का स्वर्णयुग कहा गया है।

गुप्त इन्हें इसलिये कहा जाता है कि इनके पूर्वज सेना में गर्वनर थे। जिन्हें गुप्ता, गुप्ते व गुप्ती के नाम से जाना जाता था, लेकिन इनका गोत्र धारण था जो कि अन्य किसी जाति में नहीं पाया जाता। धारण गोत्र केवल जाटों में ही है। इस वंश ने भारत का नाम विदेशों में चमकाया। इनके राज

में चलाए गए सिक्कों पर धारण लिखा पाया जाता है क्योंकि इनका गोत्र धारण था जो आज भी केवल जाटों का ही गोत्र है अन्य किसी जाति में यह गोत्र नहीं पाया जाता। चन्द्रगुप्त द्वितीय की बेटी प्रभावती ने एक शिलालेख में अपने वंश का गोत्र धारण लिखवाया था। प्रभावती के पति का गोत्र कोई अन्य गोत्र था। डॉ० एच.सी. राय चौधरी व डॉ० के.पी. जायसवाल ने इस बात की पुष्टि की है। इन जाट राजाओं ने कभी भी जात–पात, धर्म, ऊंच–नीच, छोटा–बड़ा आदि का कोई भेदभाव नहीं किया। इसके बाद बैंस गोत्र ने लगभग 150 वर्षों तक भारत पर शासन किया। जिसमें हर्षवर्धन के समय से ही खाप पंचायते शुरू हुई थी। आगे चलकर इन पंचायतों का भारत की उन्नति में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ये पंजाब में जालन्धर से आकर थानेसर में बस गए थे। इनकी राजधानी हर्षवर्धन के समय में कन्नौज में होती थी। साम्राज्य को प्रान्तों में बांटा गया था और गांवों का प्रशासन ग्राम पंचायतों के अधीन था। ब्राह्मणों को क्षत्रियों के बाद दूसरे नम्बर का दर्जा था। हर्षवर्धन वैशाली वंश से संबंधित थे जोकि बाद में बैंश गोत्र में परिवर्तित हो गया था। सर्वखाप पंचायत की स्थापना सम्राट हर्षवर्धन ने 643 ई० में की थी। इसके उपरान्त सम्राट राजा भोज पंवार और श्री जगदेव सिंह पंवार मालवा में पराक्रमी जाट शासक हुये।

उसके बाद दिल्ली में तोमर वंश की स्थापना हुई। तोमर जाट वंशों का शासक भी दिल्ली में लगभग 100 वर्षों तक रहा। इस वंश का आखरी सम्राट अनंगपाल तोमर बड़े पराक्रमी व साहसी राजा थे। इनके केवल दो पुत्री थी। इनके वंश में इनका कोई पुत्र नहीं था। इनकी बड़ी लड़की कन्नौज के राजा जयचन्द के पिता से और छोटी अजमेर के पृथ्वीराज चौहान के पिता से ब्याही थी। सन् 1176 ई० में मृत्यु से पहले राजा अनंगपाल ने पृथ्वीराज चौहान को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया जोकि अपने नाना की मृत्यु के बाद दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। इन सभी राजाओं ने कभी कोई किसी धर्म व जाति, ऊंच–नीच का भेदभाव नहीं किया। इन्होंने शुद्ध वर्ण को स्थिति का सुधार मांस व मदिरा से प्रायः परहेज किया। आम आदमी का पहनावा धोती पगड़ी व शाल था। विधवा स्त्री को पूर्ण रूप से दूसरा विवाह का कानूनी अधिकार था। जोकि जाट शासकों के अलावा अन्य किसी हिन्दु राजा के राज्य में नहीं था। इन जाट राजाओं को जाति के बारे में आजतक अलग–अलग मत है क्योंकि पौराणिक ब्राह्मणवाद की विचाराधारा वाले लेखक कभी भी इनको जाट मानने के लिए तैयार नहीं। जबकि विद्वान इतिहासकार डॉ० जे.पी. जायसवाल, डॉ० एस.डी. गुप्ता, इतिहासकार श्री दशरथ शर्मा, डॉ० राय चौधरी, राजस्थान इतिहास के रचियता डॉ० कर्नल जेम्ज टॉड, चीनी यात्री ह्वान सांग, फाहियान, युनानी यात्री मैगस्यनीज, सुप्रसिद्ध युनानी लेखक हैरोडोटस, दी जाट इतिहास रूल्ज, डॉ० भीम सिंह दहीया आदि अनेकों विद्वान इतिहासकारों का स्पष्ट मत है कि प्राचीन समय के सभी राजा जाट थे।

उन इतिहासकारों ने अनेकों तर्क देकर सिद्ध किया कि ये सभी प्राचीन राजा जाट थे। जोकि अधिकतर पंजाब से संबंधित थे जिन्होंने अपने समय में भारत पर राज्य किया। किसी की राजधानी मगध थी। किसी की उज्जैन, पेशावर, थानेश्वर व दिल्ली रही। इसके अलावा गुप्त राजाओं की व्यवस्था से भी सिद्ध होता है कि ऐसी राज व्यवस्था केवल जाट राजाओं को छोड़कर अन्य किसी हिन्दु राजा में नहीं थी।

धार्मिक कट्रता व अनैतिकता कभी भी जाट राजाओं के शासन के अंग नहीं रहे। जाटों ने कभी धर्म कट्रता नहीं दिखाई क्योंकि जाट सबसे धर्मनिरपेक्ष होता है। जाट जाति ही पृथ्वी पर एक एकसी जाति है जो सबको साथ लेकर चलती है ये सद्भावना अन्य किसी भी जाति में नहीं पाई जाती। सम्राट हर्षवर्धन उस समय के अन्तिम बोद्ध राजा थे। जिनके पूर्वज जालन्धर से आकर थानेसर में अपने हजारों साथियों के साथ आकर बस गये थे। इनका बैंस गोत्र था। सम्राट हर्षवर्धन ने ही सर्वखाप पंचायत व ग्राम पंचायतों की सन् 643 ई० में नींव रखी जिसके इतिहास का समुचित रिकॉर्ड 7वीं सदी से लेकर आजतक का सारा स्वर्गीय चौ० कबूल सिंह के गांव शोरम जिला मुजफरनगर के घर लगभग 40–45 किलो के भार मं आजतक भी जर–जर हालत में रखा हुआ है। जिसकी सहायता लेकर डॉ० एम.सी. प्रधान, डॉ० मानेफोरड, डॉ० जी.सी. द्ववेदी और डॉ० बालकृष्ण डबास ने जाट विषयों पर पी.एच.डी. की। इस रिकॉर्ड के आधार पर कई पुस्तकें भी लिखी जा चुकी है। स्वामी ओमानन्द सरस्वती व वेदवर्त शास्त्री जी ने अपने ग्रन्थ "देशभक्तों के बलिदान" में भी इसे सिद्ध किया है।

मननीय विद्वान धर्मकिर्ती ने अपने शोध में सिद्ध किया कि सम्राट कनिष्क से लेकर विजयनगर तक 17 राजाओं को बौद्ध धर्म जाट सिद्ध किया है। जिसमें अनेक शासकाल तथा राज क्षेत्र का पूरा विवरण दिया जाता है। बाकी इतिहासकारों ने इन्हें जाट कहने में क्या शर्म आती है। इसी आधार पर भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय जाकिर हुसैन ने कहा था कि भारतीय इतिहास जाट इतिहास है और जाट इतिहास ही भारतीय इतिहास है। स्वर्गीय प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी कहा था कि दिल्ली के चारों तरफ एक बहादुर और पराक्रमी जाति रहती है। यदि उसमें एकता हो जाए तो वह दिल्ली पर भी कब्जा कर सकती है। याद रहे कि जाट वीरों के पिताओं ने संसार में सबसे अधिक अपने बेटों के दाह संस्कार किए हैं। शान्ति और युद्ध में यही अन्तर होता है कि शान्ति में बेटा बाप की अर्थी को कन्धा देता है और युद्ध में

बाप बेटे का दाह संसकार करता है। महाभारत काल से आज तक संसार में प्रायः यह देखा गया है कि जाट ही आपस में एक–दूसरे के साथ लड़ते रहे हैं क्योंकि राजपूत जाति का उदय भी अधिकतर जाटों से ही हुआ है। वह चाहे भाप्पा रावल हो और चाहे पृथ्वीराज चौहान हो क्योंकि 11वीं शताब्दी तक तो इतिहास में कहीं राजपूतों का नामो निशान ही नहीं था। ये तो हमारे पूर्वज ही जो सम्भ्रांत परिवार थे ब्राह्मणों द्वारा बहला फुसला दिए गए कि तुम तो राजा के पूत हो और तुम सभी से ऊपर हो। आगे चलकर ये राजा के पूत अपने आपको राजपूत कहलाने लगे। राजपूतों के सभी गोत्र जाटों से ही मिलते है कोई अलग गोत्र इनका नहीं है। भाप्पा रावल ने भिलों की मदद से अपने वृद्ध नाना राम मोर/मौर्य जाट राजा को मार कर चितोड़ का राज्य हथिया लिया था। भाप्पा रावल गोहिल गोत्र के जाट थे जो बाद में अपने आप को सिसोदिया कहलवाने लग गए। इसी तरह पृथ्वीराज चौहान को उसके नाना अनंगपाल तोमर जाट राजा ने स्वयं का पुत्र न होने पर अपना उत्तराधिकारी बनाया था। पृथ्वीराज चौहान भी अपने आप को चौहान वंशी राजपूत कहलवाने लगे। जाटों के इतिहास को ब्राह्मणों ने नहीं लिखा क्योंकि जाट आदिकाल से लेकर अब तक पाखण्डवाद के खिलाफ रहे हैं। इसलिए ये पाखण्डी कौम जाटों से हमेशा से ही चिड़ती रही हैं। अंग्रेज भी इनको पैसों की रिश्वत देकर अपना इतिहास लिखवाते रहे हैं। हम शुक्रगुजार है कुछ इतिहासकारों के जिन्होंने जाटों का इतिहास जीवित रखा। ब्राह्मण अपने आप को समाज के उच्च दर्जा देते रहे है लेकिन क्षत्रियों के बाद ही इनका नम्बर 2 का दर्जा रहा है। एक अदने से ब्राह्मण को इन्होंने भगवान साबित करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जोकि युद्ध के समय भीष्म पितामह से हार गया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी ब्राह्मणों के पाखण्ड का घोर विरोध और भाण्डाफोड़ किया था, तो स्वामी जी को भी इन्होंने ब्राह्मण होते हुए जहर देकर मरवा दिया था। ये समाज के घोर दुश्मन हैं।

Disruption of living environment in residential sectors of Haryana

- R.N. MALIK

Last year, at the behest of the Builders lobby, the Haryana government allowed increased FAR (Floor Area Ratio) for the buildings in the residential sectors of the State. This notification was in total violation of the enshrined principles of Town Plannig that were formulated at the time of construction of Chandigarh by the renowned team of Le Carboseur during l950s. All the new townships were developed on the basis of these principles to ensure healthy and comfortable living environment for the residents. As a result, plot holders were allowed to build only two and a half storey residential buildings.The new notification allows the plot owners to build five storey houses (stilt plus four floors). No other state in India has issued any such notification so far.

Immediately after the notification, the builders approached the owners of the vacant plots and offered them to build their five storey houses at their own cost provided two top floor would be handed over to them to cover the cost of construction. The plot owners immediately agreed to their proposal and the construction work started on number of vacant plots very soon . Thereafter, owners of other old houses also started approaching the builders to construct new five story houses after demolishing the existing ones on the same pattern. Consequently, the increased building activity started causing great inconvenience to the residents. Situation in Gurgaon has become the worst. It is not the physical inconvenience alone that makes the lives of the residents inhabitable. There are other serious factors as well that have disrupted the living environment of the residents and these are enumerated below.

I. The builders started dumping the building material on the streets causing lot of inconvenience to the people and the movement of vehicles. Lot of excavated earth starts flowing on the roads during the rains making the roads very slippery. The construction activity also causes serious air, water, dust and noise pollution together with lot of insanitary conditions.

2. Demolition of not so old existing houses is causing national loss of building material besides creating dumps of waste building material which is disposed along the edges of outer roads causing a further deterioration of the environment.

3. The most pernicious effect caused by high rise buildings is that they block the sun rays in the streets, backyards and roofs of the adjoining residential buildings. Life during winters becomes a hell as the residents are deprived of the warm sunshine.. The rooms get colder and enveloped with darkness and electric lights have to be switched on even during the day causing unnecessary expense of energy. Also people cannot install solar water heaters and solar power panels at the roof tops.

4. Construction of high rise buildings will increase the population density by 80% in the residential sectors thus affecting the alredy strained water

supply system. It will also increase the population of vehicles causing vehicular movement to be more difficult. Also generation of solid waste will increase tremendously.

5. The fact of the matter is that the entire ecosystem of the residential sectors has been designed according to the provision of two and a half storey buildings. Accordingly, the entire infrastructural ecosystem will fall short of the needs of the increased population and living conditions will become hellish. For example, the width of streets will need to be increased to cope with increased population density and vehicular movement. But there is no space for further widening. Consequently, people will have to live or walk in narrow streets.

6. As a matter of fact, the State has no power to increase the FAR in old sectors because plots were allotted with the provision of constructing only two and a half storey buildings. Therefore the new notification violates the principle of Estoppel and hence unconstitutional.

Recently representatives of Panchkula residents (RWAs) met Sh. Gian Chand Gupta, Honourable Speaker of Haryana Assembly and who also represents Panchkula constituency. He assured them that the new notification of allowing five storey buildings will not be applicable in Panchkula. But the Haryana Goverment refused to honour any such assurance and the construction of high rise buildings is going on at an accelerated pace. The Haryana government has adopted an adamant attitude against withdrawal of the notification and courts seem to be the only hope for holding the notification unconstitutional and save the urban environment in the residential sectors of Haryana State.

Chhotu Ram in 1920

- Suraj Bhan Dahiya

There is the distinguishing mark of the lives of great persons who in order to emancipate sentient from misery, are inspired with great spiritual energy and mingle themselves in the filth of birth and death. Though thus they make themselves subject to the laws of birth and death, their hearts are free from sins and attachments. They are like unto those immaculate, undefiled lotus-flowers which grow out of mire, yet are not contaminated by it.

If this is the distinguishing mark of great persons, we can easily identify them by having close and dispassionate look at the way they contrived during their life times, to eliminate human suffering, exploitation, oppression and discrimination from the surface of the earth. One such greatman in our age was Chhotu Ram, who like many of his contemporaries, is gradually receding into the limbo of the past, but who, I believe will never cease to be relevant to a study of the history of the pre-partition Punjab.

While great and many indeed were his achievements in various spheres of human concern, what really stands out most prominently against everything else he did-indeed what validates his claim to a permanent riche in the history of his times- is his singular and spectacular success is the task of rescue, rehabilitation and regeneration of peasantry that had long been trambled upon with iron boots, so to say, be cunning and crafty money lenders. But like any great success his own success too extracted a very heavy price from him- a price which none before him had paid and which perhaps none after him has every paid. His commitment to his cause was unconditional and absolute, as if born only for accomplishing it amidst the rough and tumble of a life of ceaseless struggles and strifes.

Chhotu Ram was a product of his times. Born 24 years after 1857 uprising, he seemed to have carried in him the blood of a revenger. That should probably explain his rugged character of a dogged figher - bold, courageous and unbending. His was the roaring voice of a crusader to have expressed the anguish of the peasant soul. He possessed a rare will and equally rare physical strength to with stand endless incarceration right till the end of his political career. He was ever unrepentant and ever stood firm as a rock.

Chhotu Ram blazed a new trail when took up fearlessly and relentlessly the cause of the suffering peasantry in "Beachara Zamindar". He had setup the political stage being the District Congress Party President for fighting political battle for the peasantry.

Gandhiji wanted to be sole spokeman of the Congress Party and he achieved it at the special Calcutta Congress Session in September 1920. He announced to launch Non-Cooperation Movement. For the farmers, non-cooperation movement meant not to pay revenue tax, thereby forego their lands. It was anti-climax for Chhotu Ram. On this issue three Congressmen-Fazl-i-Hussain, Jinnah and Chhotu

Ram resigned from the Congress Party. At this stage, all the three were not known to each other.

So why this piece of writing? I would like to convince the readers, that Chhotu Ram's resignation from Congress Party meant 'the setting of a great Punjab peasanty planet from India's Solar System'. He was far sighted, a single-track man, wedded to farmers cause. Exactly 100 years have passed- it is September 2020, now and I in gratitude remember this great soul "He was the peasant leader par excellence, without a second in the entire peasant history". After serving the peasantry, before his departure, 75 years ago he merely uttered "Mein chala, Ram bhala Kare. Then apeasant said "He was unquestionably the idol of the peasantry. His word was law among thousands. Againt among men has fallen. The voice of a lion is hushed."

Once Chhotu Ram lost a case of a peasant under debt of a money lender in the court. Chhotu Ram declared in the court that he would change this black law. The Mahajan lawyer sarcastically said "Chhoti Ram! You are identified as 'Jatt re Jatt, Solaah duni aath', how can you change this universal law?' Chhotu Ram replied emphatically "I will, we will not allow- do anne nunke, nunke do anne.

The farmer will rule Punjab Back to three ex-congressmen- Fazl-i-Hussian Jinnah, and Chhotu Ram- all were secular. Fazl-i-Hussain and Chhotu Ram together launched a secular political party- 'The unionist Party' in 1923 while later Jinnah formed the communal Muslim League'. Chhot Ram did not allow Congress and Muslim League to have any influence in Punjab and his Unionist Party ruled Punjab over two decades. Chhotu Ram changed all laws which were hazmful to peasantry. Obviously, all such laws brought tremendous relief to the peasan and gradually their-socio-economic condition beagar to improve. They could now lead a life of respect and prosperity, with Chhotu Ram as the doughty Champion of the weak and the lowly. The kisan then undoubtedly, was the ruler of Punjab.

One cannot deny, Chhotu Ram possessed unique 'intellectual abilities and eloquence of pen and speech' and brought blood less Kisan Kranti in Punjab unlike bloody Russian and Chinese revolutions in first half of 20th Century.

आ अब लौट चलें, कांग्रेस

– कमलेश भारतीय

कांग्रेस के लिए यह होली काफी अच्छी आई। बेशक चुनावों में तो सफलता नहीं मिली और दूसरे दल बिना होली के कुछ दिन पहले होली मना गये जबकि कांग्रेस अपनी गुटबाजी के चलते पांचों राज्यों में निराशाजनक प्रदर्शन ही कर पाई। पंजाब जैसा राज्य खुद खो दिया तो उत्तराखंड में किसी को मुख्यमंत्री का चेहरा नहीं बनाया। बनाते तो शायद लोग हरीश रावत को जिता भी देते। अब तो वे भी हार गये। गोवा में बड़ी उम्मीद रही लेकिन वहां तृणमूल कांग्रेस और आप ने वोट काट दिये और कांग्रेस देखती रह गयी। मणिपुर में कोई मुकाबला ही न हुआ।

इस सबका मंथन हुआ और आगे भी होगा क्योंकि अब हिमाचल और गुजरात के चुनाव राह देख रहे हैं।भाजपा तैयारियों में जुट गयी है और कांग्रेस ने संभलने के संकेत दिये हैं।

पहले हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा से कांग्रेस हाईकमान सोनिया गांधी ने मुलाकात तो एकाध दिन बाद जी 23 समूह का नेतृत्व कर रहे जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद ने मुलाकात की। इन दोनों के चेहरे बताते हैं कि अच्छी शुरूआत हुई है और निकट भविष्य में एकता का फार्मूला तैयार हो जायेगा। कोई राह निकलेगी जिसमें यह चर्चा बहुत जोरों से छिड़ गयी है कि हरियाणा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष शैलजा के जाने के आसार बन रहे हैं। पहले अशोक तंवर और बाद में शैलजा प्रदेश संगठन ही खड़ा न कर पाईं जिससे बिखराव बढ़ता गया। प्रदेश में विपक्ष के नाते किसी बड़े आंदोलन को भी न शुरू कर पाईं। पूरा कार्यकाल बीतने को आया और संगठन का कहीं अता पता ही नहीं। अब क्या नयी जिम्मेदारी किसे, कहां मिलती है, यह आने वाला समय ही बतायेगा लेकिन बदलाव निश्चित है। हालांकि चर्चा में दीपेंद्र हुड्डा और कुलदीप बिश्नोई भी हैं। पांच राज्यों के प्रदेशाध्यक्षों से भी इस्तीफे मांग लिये हैं और जाहिर है उन राज्यों में भी नये प्रदेशाध्यक्ष बनाये जायेंगे। यह भी बात सामने आ रही है कि उपेक्षित शशि थरूर, मनीष तिवारी और आनंद शर्मा को भी नये सिरे से एडजस्ट किया जा सकता है। शुक्र है, कांग्रेस को सुध आई और एकजुटता की बातें होने लगी हैं।

नहीं तो यही कहते, बड़ी देर की हुजूर आते आते। काश। यह सोच पांच राज्यों के चुनाव से पहले बन गयी होती तो इतने निराशाजनक परिणाम न होते।

अलग अलग रणनीति कांग्रेस की

यह जो कांग्रेस है बड़ी कमाल की पार्टी है। सबसे पुरानी और एक सौ पैंतीस साल पुरानी है। स्वतंत्रता आंदोलन में इसी का बोलबाला था और स्वतंत्रता के बाद भी। लगभग सत्तर

साल तक। इसीलिए विरोधी पूछते रहते हैं कि सत्तर साल में क्या किया और क्या दिया देश को ? अब यह अलग बहस का विषय है। क्या दिया और क्या नहीं दिया ? आज तो यह मुद्दा है कि पांच राज्यों में करारी हार के बाद भी यह जो कांग्रेस है न, अलग अलग विचार मंथन कर रही है। मुख्य कांग्रेस की हाईकमान सोनिया गांधी ने जो विचार मंथन किया, उसके बाद सभी पांच राज्यों के प्रदेशाध्यक्षों से हार की जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफे मांग लिये जबकि जी 23 समूह ने अलग बैठक में सोनिया गांधी और उनके परिवार से ही एक प्रकार से इस्तीफे मांग लिये। यह जो है न कांग्रेस, बस, इसे ही कांग्रेस कहते हैं। न इसे जीत से कोई फर्क और न हार का गम। ये कांग्रेसी आपस में ही नूरा कुश्ती करते रहते हैं –ऊपर से लेकर नीचे तक। हर राज्य में। अभी छत्तीसगढ़ और गुजरात के चुनाव आने वाले हैं, विपक्ष तैयारियों में जुट गया है और कांग्रेस गुटबाजी में फंसती और डूबती जा रही है। हालांकि सोनिया गांधी ने ऑफर क्या कि यदि हमारे इस्तीफे चाहिए तो हम देने को तैयार हैं लेकिन ये जो कांग्रेस है गांधी नेहरू के नाम से अलग होने को तैयार ही नहीं। इसीलिए मल्लिकार्जुन खड़से कह रहे हैं कि जी 23 समूह कांग्रेस को कमजोर करने का कोई अवसर नहीं छोड़ता बल्कि अब तो राजेंद्र कौर भट्ठल तक इसमें शामिल हो गयी हैं।

कांग्रेस को गुटबाजी, आपसी वैर विरोध और विचारधारा से दूर होने से लगातार नुकसान पहुंच रहा है। विरोधी कम, खुद कांग्रेसी ही कांग्रेस की खत्म करने में पूरा जोर लगाये हुए हैं। एक पस्त और हारा हुआ परिवार आपस में ही लड़ाई लड़ रहा है। महाभारत जैसा हाल हो रहा है। इसे किसी विरोधी की जरूरत ही कहां रह गयी ? सब एक दूसरे की टांग खींचने में लगे हैं, नीचा दिखाने में लगे हैं और हाईकमान कानून की देवी की तरह आखों पर काली पट्टी से अपनी आंखें बंद किये बैठी है। भला, आज तक परनीत कौर कांग्रेस में क्यों ? जिसके पतिदेव कैप्टन अमरेंद्र सिंह इस्तीफा दे कर अलग पार्टी बना कर चुनाव लड़कर कांग्रेस को हराने का काम कर चुके, उनकी पत्नी से क्या उम्मीद लगाये हुए है हाईकमान ? तुरंत निकालने की हिम्मत क्यों नहीं हो रही ? गुलाम नबी आजाद जैसी गोटिया चल रहे हैं, हाईकमान के पास उसका कोई जवाब क्यों नहीं ? नवजोत सिद्धू पर भरोसा रख कर पंजाब गंवा लिया और चन्नी के भईयों वाले बयान से कितना नुकसान हुआ और कार्यवाही करने वाली प्रियंका गांधी वहां मौजूद रही और कुछ न बोली ? अब नुकसान का आकलन ही कर लो। अब तो कोई कार्यवाही कर लो। हरीश रावत कह रहे हैं कि यदि मैं इतना ही खराब हूं तो मुझे किसी खड्ड में दबा दीजिए। यह गुटबाजी उत्तराखंड में भी थमी नहीं। भाजपा सरकार बनाने में जुटी है तो कांग्रेस आपस में लड़ाई करने में मस्त है। अभी गुजरात व छत्तीसगढ़ की बात कौन करे ? उत्तर प्रदेश में सिर्फ दो सीटें आने और हार की जिम्मेदारी लेने प्रियंका आगे क्यों नहीं आती? सारा मोर्चा संभाल रखा था और न कोई नारा काम आया, न ही रोड शो। कहां गया कांग्रेस का करिश्मा ?

सोनिया गांधी कह रही हैं कि चुनाव में सोशल मीडिया का दखल लोकतंत्र के लिए खतरा है। कैसा खतरा ? आपकी आईटी टीम बुरी तरह फेल तो दूसरों पर दोष क्यों ? सोशल मीडिया पर आइए आप भी। किसने रोका है ? दूसरों पर दोष देने का समय नहीं, कांग्रेस को खुद को संभालना और बदलना है। समय रहते यह बदलाव लाना होगा नहीं तो छत्तीसगढ़ भी हाथ से निकल जायेगा। फिर यही कहोगे:

नक्शा उठा के कोई नया राज्य ढूंढिये, सभी राज्यों में तो हार हो चुकी।

यह राजनीति है तू देख बबुआ, यह राजनीति है तू देख बबुआ।

अभी छह सात माह पहले पंजाब कांग्रेस के प्रभारी रहे हरीश रावत आज खुद उसी दौर से गुजर रहे हैं। पहले तो उन्हें उत्तराखंड में मुख्यमंत्री का चेहरा ही घोषित नहीं किया और फिर वे खुद हार भी गये। अब उन पर आरोप लगने लगे हैं कांग्रेस के अंदर ही। जिससे आहत होकर हरीश रावत ने कहा कि यदि मैं इतना ही खराब हूं तो मुझे पकड़कर खड्ड में दबा दो। कांग्रेस को अपने लिए भगवान माना तो अब होलिका दहन आ रहा है तो उनका भी राजनीतिक दहन हो जाना चाहिए। इतने ही आहत और बेआबरू होकर कैप्टन अमरेंद्र सिंह कांग्रेस से गये थे तब प्रभारी थे रही हरीश रावत यानी जो किया वह अब खुद भगत रहे हैं। उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री व केंद्रीय समिति में प्रभावशाली रावत का सितारे अब डूब गये हैं। इधर पंजाब में हारे हुए कांग्रेस प्रत्याशी कह रहे हैं कि हमें तो चन्नी ने डुबोया। इसे सीएम बनाना बहुत बड़ी गलती थी और अब इसे कांग्रेस से बाहर किया जाये। हालांकि पूर्व हॉकी खिलाड़ी व पूर्व मंत्री रहे परगट सिंह ने कहा कि यह समय एक दूसरे पर कीचड़ उछालने का नहीं है बल्कि हार से सबक लेकर आगे बढ़ने का समय है। ये बातें पंजाब क्रांग्रेस के प्रभारी हरीश चौधरी के सामने रखी गयीं।

आज ही शहीद भगत सिंह के पैतृक गांव खटकड़ कलां में भगवंत मान शपथ ले रहे हैं और उस शपथ लेने पर आम जनता के अढ़ाई करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान बताया जा रहा है। यह शपथ कितनी सादगी से ली जा रही है और पहले से ही आर्थिक बोझ तले दबे पंजाब को पहले दिन ही आर्थिक चपत बड़ी बेरहमी से लगाई जा रही है। ऊपर से मुत भी कुछ देने की घोषणाएं हैं। केजरीवाल के पहली बार मुख्यमंत्री बनने पर राखी बिड़ला ऑटो में विधानसभा पहुंची थी लेकिन फिर केजरीवाल ने बड़ा बंगला भी लिया और वह लक्की बेगनार गाड़ी भी छोड़कर सरकारी गाड़ियों में शान से सवारी निकलने

लगी। बेगनार वाला अपनी कार वापस मांगने आ गया। अब तो इस सादा शपथ ग्रहण समारोह पर यही कह सकते हैं कि
इस सादगी पर कौन न मर जाये ए खुदा,,,,
इसी प्रकार हरीश रावत की स्थिति पर यह शेर याद आ रहा है:

तुमसे पहले भी, जो शख्स तख्त पर नशीन था
उसको भी अपने खुदा होने पर इतना ही यकीन था,,,
राजेश खन्ना भी कहा करते थे कि
आज जहां मैं हूं, कल कोई और था
वो भी इक दौर था, ये भी इक दौर है,,,,

भूजल - अदृश्य को दृश्यमान बनाना

– दीपक कुमार शर्मा

देश को पानीदार बनाना होगा.. बेंजामिन फ्रैंकलिन ने कहा था, जब कुआँ सूख जाता है, तो हम पानी की कीमत सीखते हैं। –

विश्व जल दिवस मनाते हुए हमें 29 साल हो चुके हैं। पहला विश्व जल दिवस 22 मार्च 1993 को मनाया गया था। इस वर्ष विश्व जल दिवस 2022 का थीम है भूजल – अदृश्य को दृश्यमान बनाना।

वायु, जल और भोजन तीन आवश्यक चीजें हैं जो मनुष्य को पृथ्वी पर जीवित रहने के लिए चाहिए। जल प्रमुख आवश्यकताओं में से एक है। जल के पर्याप्त और निरंतर स्रोत के बिना, पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व नहीं हो सकता। इसलिए, हम कह सकते हैं कि "जल ही जीवन है"।

पूरी पृथ्वी पर 71 प्रतिशत जल है। पूरे संसार में 2. 5 प्रतिशत जल ही पीने लायक हैं। 68.7 प्रतिशत ग्लेशियर और बर्फ के टुकड़े, 30.1 प्रतिशत भू–जल, 1.2 प्रतिशत भूतल/अन्य मीठे जल के रुप में। जब बच्चा मां की कोख में होता है। उस समय बच्चे में 99 प्रतिशत जल होता है। जब बच्चा पैदा होता है तो उसमें लगभग 90 प्रतिशत जल होता है। जब बच्चा बड़ा होता है, तो उसमें 70 प्रतिशत जल होता है और जब वह बच्चा बूढ़ा होता है तो उसमें जल की मात्रा 50 प्रतिशत के आसपास रह जाती है। मानव मस्तिष्क में 75 प्रतिशत, हड्डियों में 25 प्रतिशत और रक्त (खून) में 83 प्रतिशत जल होता है यानी कि जल ही जीवन है।

अगर हम अपने देश की बात करें तो आज भारत में स्थिति जल को लेकर भयंकर होती जा रही है नीति आयोग की 2018 की रिपोर्ट कहती है कि आधे देश में जल को लेकर संकट है। नीति आयोग की रिपोर्ट कहती है कि 2030 तक 40 प्रतिशत भारतीयों को पीने का जल नहीं मिलेगा। देश में सिर्फ 28 प्रतिशत भूजल बचा जबकि पीने का जल खेती उद्योग इन सब में उपयोग होता है।

भारत में 1911 अरब क्यूबिक मीटर जल उपलब्ध है। जल की कमी से जूझते पूरे विश्व के 20 शहरों में 5 शहर भारत के हैं। इन 20 शहरों की सूची में नंबर 1 पर टोक्यो है, तो नंबर 2 पर दिल्ली है, नंबर 6 पर कोलकाता, 18 पर चेन्नई, 19 में पर बेंगलुरु और 20 नंबर पर हैदराबाद है। विश्व बैंक के अनुमान के मुताबिक भारत करीब 230 घन किलो मीटर भू–जल का दोहन प्रति वर्ष करता है। सिंचाई का लगभग 60 प्रतिशत और घरेलू उपयोग का लगभग 80 प्रतिशत भूजल ही होता है देश का 54 प्रतिशत इलाका जल के गंभीर संकट से जूझ रहा है। देश में 1950 से 2010 के बीच ट्यूबलों की संख्या 10 लाख से 3 करोड हो गई है। जल की खपत की दृष्टि से विश्व में भारत का दूसरा स्थान है। लेकिन अगर भू–जल की बात करें, भू–जल की खपत में भारत का पूरे विश्व में पहला स्थान है। देश के 60 प्रतिशत जिलों में भू–जल का दुरुपयोग होता है।

भू–जल का दुरुपयोग करने वाले राज्यः–

1. पंजाब 76 प्रतिशत
2. दिल्ली 56 प्रतिशत
3. हरियाणा 54 प्रतिशत
4. तमिलनाडु 31 प्रतिशत
5. कर्नाटक 24 प्रतिशत
6. उत्तर प्रदेश 14 प्रतिशत

राष्ट्रीय संकलन भारत के प्रगतिशील भू–जल संसाधन 2020 की रिपोर्ट के मुताबिक :–

1. कुल वार्षिक भू–जल रिचार्ज : 436.15 (अरब घन मीटर
2. वार्षिक निष्कर्षण योग्य भू–जल संसाधन : 397.62 (अरब घन मीटर
3. वार्षिक भूजल निष्कर्षण : 244.92 (अरब घन मीटर
4. भू–जल निष्कर्षण का स्तर : 61.6 प्रतिशत

देश में कुल 6965 खंड हैं। जिनमें से 1114 खंडों में जल का अति दोहन हो रहा है। वही 270 खंडों में जल की स्थिति विकट है। 1057 खंड विकट होने की स्थिति में है। वही 97 खंडो का पानी नमकीन, खारा है। देश में 224 जिलों के भू–जल में लोराइड की मात्रा तय सीमा से अधिक है। वही देश के कुल 86 जिलों के भू–जल में आर्सेनिक की मात्रा तय सीमा से अधिक है। देश की 85 प्रतिशत ग्रामीण आबादी पीने और घरेलू उद्देश्यों के लिए भू–जल का उपयोग करती है।"

हमारे देश की 70 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है। अगर जल नहीं होगा तो खेती कैसे होगी। हम जिस तरह भू–जल

का दोहन कर रहे हैं आने वाले समय में हमें उसके गंभीर परिणाम देखने को मिलेंगे हमें बे–पानी होने से कोई नहीं रोक सकता अगर हम इसी तरह भू–जल का दोहन करते रहे।

कृषि में जलः–

जल नहीं तो अनाज नहीं, अनाज नहीं तो रोजगार नहीं।

पूरे विश्व में भारत खेती में सबसे ज्यादा जल का इस्तेमाल करता है।

भारत में जल की खपत

कृषि में 83 प्रतिशत, उद्योग में 12 प्रतिशत, घरेलू में 5 प्रतिशत,

यूरोप में जल की खपत

उद्योग में 54 प्रतिशत, कृषि में 33 प्रतिशत, घरेलू में 13 प्रतिशत,

संसार में जल की खपत

कृषि में 69 प्रतिशत, उद्योग में 23 प्रतिशत, घरेलू में 8 प्रतिशत

1 किलो चावल धान के उत्पादन में कम से कम 3500 लीटर पानी की खपत होती है। 1 किलो गेहूं के उत्पादन में लगभग 1400 लीटर पानी की खपत होती है। 1 किलो चीनी के उत्पादन में 1200 लीटर पानी की खपत होती है।

हरियाणा और पंजाब में 1 किलो धान पैदा करने में लगभग 5400 लीटर पानी की खपत होती है।संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में प्रतिदिन 244 करोड रुपए का भोजन बर्बाद होता है। जो सालाना 89060 करोड रुपए बैठता है। 2016 की एक रिपोर्ट के मुताबिक ब्रिटेन के लोग जितना खाना खाते हैं। उतना भारतीय नष्ट करते हैं। साल 2019–20 में भारत ने करीब 44.15 लाख टन बासमती चावल निर्यात किया। 44. 15 लाख टन बासमती चावल उगाने के लिए 12 ट्रिलियन (12 खरब) लीटर पानी खर्च हुआ। इसे आप ऐसे भी बोल सकते हैं कि भारत ने 44.15 लाख टन बासमती के साथ 12 ट्रिलियन (12 खरब) लीटर पानी भी दूसरे देशों को भेज दिया, जबकि पैसे सिर्फ चावल के मिले।

15 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जल जीवन मिशन की घोषणा की थी। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य वर्ष 2024 तक हर घर को नल से जल देना है। 15 अगस्त 2019 को देश में सिर्फ 16.75 प्रतिशत (तीन करोड़ 23 लाख) घरों को नल से जल मिल रहा था, 19 मार्च 2022 को 47.78 प्रतिशत (9 करोड़ 23 लाख) घरों को नल से जल मिल रहा है।जबकि देश में 19 करोड़ 31 लाख घर है। अभी भी देश के 50 प्रतिशत से ज्यादा घर नल से जल से वंचित है। तो जिन लोगों को जल मिल रहा है, उनका यह दायित्व बनता है कि वह जल का संचय करें, सदुपयोग करें।

जल संरक्षण संबंधित 5 आर रणनीति :–

रिड्यूस :– जल का व्यय कम करना।

रियूज जल का पुन प्रतिशत प्रयोग करना।

रिचार्ज :– वर्षा जल संचय करना।

रिसाईकिल :– जल का पुनर्चक्रण करना।

रिस्पेक्ट :– जल की इज्जत करना।

आप सब ने एक कहानी पढ़ी होगी या सुनी होगी। प्यासा कौवा जो प्यास लगने पर एक घड़े में रखे पानी में कंकड़ डालता है और पानी ऊपर आ जाता है और कौवा पानी पी कर चला जाता है। भविष्य में कौवा भी होगा, घड़ा भी होगा, कंकड़ भी होंगें मगर पानी नहीं होगा जिस तरह हम भू–जल का दोहन कर रहे हैं। कौवा घड़े में कंकड़ तो डालेगा, लेकिन पानी नहीं, कंकड़ ही ऊपर आयेंगे। क्या आप ऐसा भविष्य चाहते हैं ? अगर नहीं तो आज से ही और अब से ही जल संरक्षण की इस मुहिम में अपनी सहभागिता निभाएं और एक सुनहरे भविष्य का निर्माण करें।

अगर आप चाहते हैं कि आपका देश पानीदार बना रहे तो हमें वर्षा जल संचय करना होगा और खेती में जल की खपत को कम करना होगा। तभी हम हमारे देश को पानीदार बना सकते हैं। हमें भू–जल के निर्वहन और पुनर्भरण में संतुलन स्थापित करना होगा।

आइए इस विश्व जल दिवस पर संकल्प करें कि अपने देश को हम पानीदार देश बनाएंगे।

पांच राज्यों के चुनाव में मिथक टूटे

– प्रमोद भार्गव

पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव के परिणाम आ गए हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि भाजपा ने खासतौर से उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में चुनावी इतिहास रचने के साथ कई मिथक भी तोड़े हैं। वहीं, अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी ने भारी बहुमत से पंजाब में सरकार बनाने जा रही है। आप की इस अप्रत्याशित जीत ने उसके अखिल भारतीय दल बनने का रास्ता खोल दिया है। आम आदमी पार्टी एक तरह से अब कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी का ठोस विकल्प बनकर तो उभर ही रही है, वहीं उसकी इस जीत ने आप के राष्ट्रीय विकल्प बनने की उम्मीद भी बढ़ा दी है। इस चुनाव को ऐतिहासिक इसलिए भी कहा जाएगा, क्योंकि इस बार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को छोड़कर जो भी पूर्व मुख्यमंत्री चुनाव लड़

रहे थे, वे हार गए हैं। इनमें पंजाब और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री शामिल हैं। पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्रियों में कैप्टन अमरिंदर सिंह, प्रकाश सिंह बादल, सुखबीर सिंह बादल और दो विधानसभा सीटों से लड़ रहे वर्तमान मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी चुनाव हार गए हैं। हर चीज में हास्य को भौंडे उपहास में बदलने वाले नवजोत सिंह सिद्धू को भी मतदाताओं ने धूल चटा दी है। आप को 92 सीटें देकर, उसे स्वच्छ व जनहितकारी राजनीति करने का पूर्ण बहुमत देकर संपूर्ण विश्वास जता दिया है। अब आप के दिल्ली मॉडल को पंजाब ने और अच्छे से लागू किया जा सकता है, क्योंकि अब दिल्ली की तरह न तो सरकार के पास आधे–अधूरे अधिकार रहेंगे और न ही राज्यपाल का किसी किस्म का हस्तक्षेप?

अब कांगेस के भविष्य की संभावनाओं पर पूरी तरह पानी फिर गया है। उसके तीनों मोहरे सोनिया गांधी, राहुल और प्रियंका को जनता ने पूरी तरह नकार दिया है। यही हश्र बसपा और मायावती का हुआ है। एक समय काशीराम ने पंजाब में ही बसपा का गठन कर उसे लोकप्रिय पार्टी बनाया था। तब लगा था कि यह पार्टी कांग्रेस का विकल्प बनकर अखिल भारतीय विस्तार कर लेगी, लेकिन काशीराम की लाइलाज बीमारी और मायावती के हाथ बसपा की बागडोर लग जाने से एक तो पार्टी का आंतरिक लोकतंत्र खत्म हो गया, दूसरे एकतंत्री हुकूमत का स्वरूप दे दिए जाने के कारण यह पार्टी मायावती की मुट्ठी में बंद हो गई। मायावती ने इसमें जातीय समीकरणों का बेमेल तड़का लगाकर उत्तर प्रदेश की सत्ता तो हथिया ली, लेकिन न तो वे दलितों के लिए कोई क्रांतिकारी नीतिगत लाभ दे पाईं और न ही समग्र समाज के लोकहित साध पाईं। धन लेकर टिकट बेचने के भी उन पर खूब आरोप लगे। आखिर में इस बेनामी संपत्ति का ही परिणाम रहा कि उन्होंने 2022 के इस चुनाव में भाजपा के आगे लगभग हथियार डाल दिए। नतीजतन बसपा महज एक सीट पर सिमट गई, जबकि 2017 में उसकी 19 सीटें थीं। यानी अब बसपा की संभावनाएं धूमिल हो गई हैं।

117 सीटों वाले पंजाब में आप ने दिल्ली की तरह नया इतिहास रचा है। कांग्रेस, भाजपा, शिरोमणि अकाली दल और बसपा बगलें झांक रहे हैं। अमरिंदर सिंह पटियाला के महाराजा रहे हैं, लेकिन उनकी हार ने उन्हें आम आदमी में बदल दिया है। दरअसल अमरिंदर सिंह को ठीक चुनाव के पहले मुख्यमंत्री पद से हटाना कांग्रेस को महंगा पड़ा है। नवजोत सिंह सिद्धू ने जिस तरह से अमरिंदर सिंह को हटाने का राहुल–प्रियंका के साथ खेल खेला, उसने कांग्रेस का तो सूपड़ा साफ किया ही, खुद को भी गड्ढे में डाल दिया।

साफ है, कांग्रेस को उसकी अंतर्कलह भारी पड़ी। चन्नी को मुख्यमंत्री बनाकर जो दलित कार्ड चला था, वह भी काम नहीं आया। खुद कांग्रेस अध्यक्ष सिद्धू ने अपने भाषणों में चन्नी को झूठा ठहराया और निकम्मा तक कहा। भ्रष्टाचार के धन से चन्नी को करोड़पति होना बताया। इसके बावजूद केंद्रीय नेतृत्व ने उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही करने की हिम्मत नहीं दिखाई। इससे तय हुआ कि राहुल और प्रियंका दोनों ही न तो कोई दूर.ष्टि रखते हैं और न ही उनमें निर्णय लेने की क्षमता है। अतरूएव झाड़ू ने सबको साफ कर दिया। यही वजह रही कि सभी दिग्गज धूल चाटते दिखाई दिए।

दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल ने पंजाब की जीत के साथ राष्ट्रीय स्तर पर एक विकल्प के रूप में नए विपक्ष का बीज बो दिया है। दिल्ली के बाहर किसी अन्य राज्य में सरकार बनाने का अर्थ दल की विस्तारवादी नीति को अमल में लाना है, इसीलिए केजरीवाल ने शहीद भगत सिंह को प्रतीक मानते हुए कहा भी कि पंजाब में जो हुआ, वह किसी इंकलाब से कम नहीं है। भगत सिंह एक जाट सिख थे, लेकिन वे जाति में विश्वास नहीं करते थे। वे नास्तिक थे और साम्यवादी क्रांति के पक्षधर थे। बड़ी चतुराई से केजरीवाल ने भारत माता की जय के साथ इंकलाब जिंदाबाद के नारे भी लगवाए। भगत सिंह एक ऐसे गरम दल के नेता रहे हैं, जिनका प्रभाव पंजाब में ही नहीं पूरे देश में है। साफ है, प्रतीक चुनने में केजरीवाल ने समझदारी बरती है। भविष्य में तय है, आप भाजपा को राष्ट्रीय स्तर पर चुनौती पेश करने जा रही है। दरअसल आप एक ऐसे दल के रूप में पेश आ रही है, जिससे पेशेवर कार्यकर्ता जुड़ रहे हैं और इनमें एनआरआई भी शामिल हैं, जो धन के प्रबंधन से लेकर सोशल साइट्स पर दल के पक्ष में मुहिम भी चलाते हैं।

अरविंद केजरीवाल के जनता पर जादुई असर ने आम आदमी पार्टी के लिए वैकल्पिक राजनीतिक दल के रूप में खड़ा होने का रास्ता खोल दिया है। गैर कांग्रेस और गैर भाजपावाद का यह दल कालांतर में सही विकल्प साबित हो सकता है, क्योंकि अब तक भाजपा और राममनोहर लोहिया के समाजवादी आंदोलन से निकले लोग ही गैर कांग्रेसवाद का नारा बुलंद करके तीसरे मोर्चे का विकल्प साधकर सत्तारूढ़ हुए हैं, लेकिन आजादी के बाद देश में यह पहली बार सामने आया है कि बिना किसी वैचारिक आग्रह के एक राजनीतिक दल, राजनीति में भ्रष्टाचार मुक्त शासन व्यवस्था और शुचिता की संस्.ति के पंखों पर सवार होकर देशव्यापी असर दिखाने को उतावला है। कामयाबी की सीढ़ियों पर निरंतर आगे बढ़ती आप ने कांगेस व भाजपा समेत सभी राजनीतिक दलों को सकते में डाल दिया है। सबसे बड़ा झटका पंजाब की हार से कांग्रेस को लगा है, क्योंकि अब राज्यसभा में पंजाब की पांच सीटों के चुनाव होने हैं और आप ने 92 सीटों पर जो बड़ी जीत हासिल की है, उससे तय है कि पांचों सीट उसी की झोली में जाएंगी। छोटे पर्दे के हास्य कलाकार भगवंत सिंह मान को पंजाब जैसे अहम राज्य का मुख्यमंत्री बनाकर आप ने तय कर दिया है कि वह वास्तव में आम आदमी की पार्टी है।

मोटापा विश्व के लिए चुनौती

– अल्का आर्य

मोटापा कैसे कम करें, संबधित विज्ञापन चारों ओर देखने को मिल जाते हैं, चाहे वह पार्क हो या बस स्टेंड, बस्ती हो या पॉश इलाके की कोई दीवार। विश्व इस समय मोटापे की समस्या से जूझ रहा है। मोटापा दुनिया के सबसे बड़े स्वास्थ्य संकटों में से एक है। दुनियाभर के आंकड़े भयावह तस्वीर सामने रखते हैं। हालिया आकड़ों के अनुसार दुनिया में 80 करोड़ से अधिक लोग मोटे हैं। यह संख्या बढ़ रही है। विश्व मोटापा महासंघ ने भारत समेत दुनिया के 200 मुल्कों में वयस्कों और बच्चों के मोटापे पर किए गए अध्ययन का निष्कर्ष वर्ल्ड ओबेसिटी एटलस में जारी किया है। दुनिया में 2030 तक हर 5 में से 1 महिला और हर सात में से 1 पुरुष मोटापे के साथ जी रहा होगा। वर्ष 2030 तक दुनियाभर में एक अरब से अधिक लोग मोटापे की चपेट में होंगे।

जहां तक भारत का सवाल है, रिपोर्ट के अनुसार अगले 8 साल में, भारत की 7 करोड़ वयस्क आबादी मोटापे के दायरे में होगी। 2010 यानी 11 साल पहले यह संख्या 2 करोड़ थी। अंदाजा लगाया जा सकता है कि मोटे लोगों की बढ़ने की रतार कितनी तेज है। 5 से 19 आयु वर्ग के 2.71 करोड़ बच्चे भी मोटापे की गिरत में होंगे। रिपोर्ट के मुताबिक एक भी मुल्क ऐसा नहीं है, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के मोटापे के मानकों पर खरा उतरता हो। ध्यान देने वाला एक अहम बिंदु यह भी है कि अक्सर मोटापे को अमीर, विकसित मुल्कों व अमीर लोगों की समस्या के रूप में लिया जाता है, लेकिन वास्तव में यह नजरिया सही नहीं है। अधिक वजन, मोटापा विकसित व विकासशील दोनों तरह के मुल्कों की समस्या है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार मोटापे की समस्या 1975 से बच्चों, किशारों व वयस्कों व सभी वर्गों के लोगों में तीन गुणा हो गई है। यह समस्या विकसित व विकासशील दोनों तरह के मुल्कों में अपनी गहरी जड़ें बनाए हुए है। दुनिया की आधी मोटी महिलाएं अमेरिका, भारत, चीन, पाक समेत 11 मुल्कों में हैं और आधे मोटे पुरुष भारत, अमेरिका जैसे 9 मुल्कों में हैं। जहां तक बच्चों में मोटापे का सवाल है, दुनिया के कुल मोटे बच्चों में से 75 फीसदी बच्चे निम्न आय वाले मुल्कों में रहते हैं। मोटापा एक गंभीर शारीरिक समस्या ही नहीं है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर डालता है। दरअसल मोटापा कई गंभीर बीमारियों की शुरुआत है। जिस पर काबू पाकर टाइप 2 मधुमेह, उच्च रक्तचाप, कैंसर, ह्रदयघात व स्ट्रोक जैसी कई बीमारियों को दूर रखा जा सकता है। मानसिक तौर पर ऐसे इंसानों में अवसाद के लक्षण देखने को मिल सकते हैं। वजह वे समाज में अपनी शारीरिक संरचना के चलते खुद को सहज नहीं पाते। उनमें आत्म–सम्मान की कमी भी देखने को मिल सकती है। उनके अंदर एक तरह की हीन भावना भी पैदा हो सकती है। यहां यह जिक्र करना प्रासगिंक है कि ऐसे इंसानों को अपनी शरीरिक बनावट के प्रति शर्मिंदा होने की जरूरत नहीं, बल्कि उन्हें अपनी जीवन शैली में सुधार करने व स्वस्थ आहार लेने पर फोकस करना चाहिए। गौरतलब है कि विश्व मोटापा संघ ने अधिक वजन, मोटापे सरीखी गंभीर समस्या पर दुनियाभर का ध्यान आकर्षित करने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ मिलकर काम करना शुरू किया। 11 अक्तूबर 2015 को विश्व मोटापा दिवस मनाने की शुरूआत की। यह दिवस सहयोगात्मक उपयोगी कार्रवाई और पहलों के उद्देश्यों के साथ प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इसे मनाने के पीछे मकसद लोगों को इसके बारे में जागरूक करना व इसके उन्मूलन की दिशा में कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

यह भी गौर करने लायक है कि इस विश्व मोटापा दिवस का मकसद लोगों को जागरूक करने के साथ ही साथ लोगों को ऐसे लोगों का मजाक उड़ाना नहीं, समझाना भी है। 2016 में बचपन में मोटापे की समस्या पर फोकस किया गया था। वर्ष 2020 से विश्व मोटापा दिवस 4 मार्च को मनाया जाता है। इसका मिशन मोटापा कटौती, रोकथाम और उपचार करने के वैश्विक प्रयासों की अगुआई और संचालन करना है। विश्व मोटापा दिवस 2022 का थीम श्एवरीबडी नीड्स टू एक्ट श् है। मोटापे की प्रमुख वजहों में अधिक वसा वाले भोजन का सेवन करना है। कम व्यायाम करना व स्थिर जीवन जीना भी एक कारण है। असुंतलित आहार लेना, पर्याप्त नींद नहीं लेने से भी मोटापा बढ़ सकता है। खराब जीवन शैली व स्वास्थ्य को हानि पहुंचाने वाली खाद्य सामग्री का सेवन इंसान को मोटा बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। अब दुनिया के कई मुल्कों में इस बात पर जोर दिया जाने लगा है कि पैकेट बंद खाने के सामान पर हेल्थ स्टार रेटिंग होनी चाहिए। हेल्थ स्टार रेटिंग पैकेट बंद खाने में शमिल नमक, चीनी और वसा की मात्रा के आधार पर दी जाती है। अभी ब्रिटेन, चिली, मैक्सिको, न्यूजीलैंड और आॅस्ट्रेलिया में पैकेट बंद खाने पर हेल्थ स्टार रेटिंग प्रणाली लागू है। भारत में भी इसे लागू करने पर विचार हो रहा है। जीवन शैली से जुड़ी बीमारियों के बोझ से दबे भारत में रेटिंग प्रणाली लागू करने की जरूरत है।

भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण फ्रंट आफ पैकेजिंग लेबलिंग को लेकर नई नीति बना रहा है। वसा, नमक, चीनी के बारे में जानकारी पैकेट के सामने वाले हिस्से पर प्रकाशित होगी। बच्चों में मोटापा एक अति चिंता का विषय है।

कोविड–19 महामारी ने भी बच्चों में मोटापे की समस्या को बढ़ा दिया है। कारण स्कूलों का न खुलना व लॉकडाउन के कारण शारीरिक गतिविधियों का थम जाना। इस संदर्भ में बच्चों के अधिकारों के लिए काम करने वाली अंतरराष्ट्रीय संस्था यूनिसेफ वक्त–वक्त पर जागरूकता अभियान चलाती रहती है। यूनिसेफ इंडिया ने अन्य भागीदारों के साथ मिलकर इस विश्व मोटापा दिवस के मौके पर भारत के बच्चों, किशारों को स्वस्थ आहार मुहैया कराने के लिए श्लेट्स फिक्स अवर फूडश नामक अभियान की शुरुआत की है। इसके तहत ई संवाद श्रंखला शुरू की है। ऐसा पहला संवाद हाल ही में आयोजित किया गया। यूनिसेफ इंडिया के प्रमुख पोषण अधिकारी अर्जुन डी वेक्ट का कहना है कि अस्वथकारी खाद्य सामग्री की आक्रामक विज्ञापन शैली व विपणन प्रणाली भी अस्वथकारी भोजन के माहौल को बनाने में अपनी भूमिका निभाती है। इस कारण भी बच्चों में मोटापा बढ़ा है। सरकारों की जिम्मेदारी है कि वे बच्चों के पर्याप्त पोषण वाले भोजन के बाल अधिकार को संरक्षण दे, ऐसा वे बच्चों की सुरक्षित व किफायती पौष्टिक आहार तक पहुंच की गारंटी देकर कर सकते हैं।श यूनिसेफ का मानना है कि सरकार को बच्चों की प्राथमिकताओं पर ध्यान देना चाहिए। दुनिया मोटापे की आर्थिक कीमत भी चुका रही है। मोटापा का अर्थव्यवस्था पर भी असर हो रहा है। भारत में वर्ष 2019 में मोटापे पर खर्च 1.72 लाख करोड़ रुपये था, जो जीडीपी का 0.8 फीसदी था। 2060 में यह खर्च 35.92 लाख करोड़ रुपये हो जाएगा,जो जीडीपी का 2.75 फीसदी होगा।

बाढड़ा: हरियाणा की विकास गाथा में आखिरी पोस्ट

– डॉ शेर सिंह सांगवान

राजस्थान बोर्डर के पास दक्षिण हरियाणा के चरखी दादरी जिले के एक गांव बाढड़ा को 26 जून 2021 को राज्य की 58वीं नगर समिति (MC) के रूप में अधिसूचित किया गया। यह 2016 तक भिवानी जिले का एक ब्लॉक था और 1966 में राज्य के निर्माण के समय यह महेंद्रगढ़ जिले के अधीन था। इस क्षेत्र में लगभग 300 मिमी की औसत वार्षिक वर्षा होती है और इसमें कोई नदी या नहर नहीं है, इसलिए, 1976 तक यहां तैनात सरकारी कर्मचारियों को शुष्क क्षेत्र भत्ता दिया जाता था। इसकी कठिनाइयाँ एक 80 वर्षीय सेवानिवृत्त डीएसपी द्वारा मुझे सुनाई गई एक घटना से स्पष्ट होती हैं। "जून 1962 में, मुझे सहायक उप–निरीक्षक के रूप में एक अस्थायी ड्यूटी के लिए बाढड़ा थाने में रिपोर्ट करने के लिए गुड़गांव पुलिस स्टेशन (PS) में एक तार मिला। यहां कोई मुझे बाढड़ा की लोकेशन नहीं बता सका। दिल्ली के अंतरराज्यीय बस टर्मिनस पर पहुंचने के बाद भी, मुझे बाढड़ा का सटीक सुराग नहीं मिला, लेकिन मुझे रोहतक जाने की सलाह दी गई। मैं बस कर्मचारियों से रोहतक में बधरा के बारे में पूछ रहा था, तो सौभाग्य से उस क्षेत्र के एक ड्राइवर ने पहले मुझे इसके स्थानीय उच्चारण 'बाढड़ा' के लिए सही किया और चरखी दादरी के लिए बस लेने की सलाह दी, जहां मैं शाम 5 बजे पहुंचा। उस समय, आखिरी और शायद एकमात्र निजी बस पहले ही जा चुकी थी इसलिए मैं दादरी थाने में रात को रुका। अगले दिन, मैंने लगभग 8 बजे बस पकड़ी और 11 बजे बाढड़ा पहुँच गया। थाना जींदिया महाराज की आजादी से पहले की पुलिस चौकी में बस स्टॉप से करीब एक किमी दूर था। जून में तापक्रम 450 सेंटीग्रेड था और तेज गर्म हवा ने रेतीले फुटपाथ को मिटा दिया था। मैं अपने कंधों पर अपना छोटा सा बिस्तर लेकर चल रहा था, तभी एक ग्रामीण ने पूछा, साहब (क्योंकि मेरी कमीज पेन्ट के नीचे थी) कहाँ जा रहे हो? मैंने उससे कहा, मैं थाने जा रहा हूं, उसने कहा, तुम इस तरह नहीं पहुंच पाओगे, इसलिए मुझे अपना बिस्तर दो और मेरे पीछे आओ। जैसे ही मैं थाने में पहुंचा और स्टाफ ने मुझे तुरंत हाथ धोने और खाना लेने के लिए कहा जो उसके बाद उपलब्ध नहीं होगा।" अब डेढ़ दिन की अग्नि परीक्षा की बजाय गुड़गांव से 3 घंटे बाढड़ा थाने पहुंचा जा सकता है।

नब्बे के दशक के अंत तक बाढड़ा गाँव में कोई सरकारी या निजी हाई स्कूल और क्लिनिक नहीं था। 2011 की जनगणना के अनुसार इसकी आबादी सिर्फ 6333 है, हालांकि इसका नाम इसके आसपास के गांवों में थाने का पर्याय था। अगर कोई झगड़ा या विवाद के बाद थाने जाने की सोच रहा है, तो वह सिर्फ इतना कहेगा कि मैं बाढड़ा जा रहा हूं। एक बार, सिवानी के पास बसे हमारे गाँव के एक अशिक्षित किसान ने किसी से पूछा कि इस गाँव का बाढड़ा कहाँ है। बाढड़ा निर्वाचन क्षेत्र के विधायक बार–बार बदलते रहे हैं और उनमें से किसी ने, अस्सी के दशक में रण सिंह मान को छोड़कर बाढड़ा के साथ आत्मीयता नहीं दिखाई है। इसके बावजूद, फल, सब्जियों और अन्य सभी उपभोक्ता और टिकाऊ वस्तुओं की खुदरा दुकानों की संख्या के मामले में गाँव ने अपने से भी बड़े सभी पड़ोसी गाँवों को पीछे छोड़ दिया है। अब यहां चार सरकारी और निजी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, एक सरकारी कॉलेज और अनाज मंडी हैं, हालांकि एमबीबीएस डॉक्टर का कोई क्लिनिक नहीं है।

बाढड़ा क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक सत्तर के दशक में विद्युतीकरण है। इसने सिंचाई के लिए नलकूपों की स्थापना को सक्षम किया जो 1977 से फ्लैट दर के बाद

अधिक लाभदायक हो गया। सिंचाई के साथ, खरीफ मौसम में बाजरा और दालों के क्षेत्र को कपास और बाजरा में स्थानांतरित कर दिया गया और रबी में गेहूं और सरसों की अतिरिक्त फसल बोई जा रही है। इससे किसानों और अन्य की आय में वृद्धि हुई है। इसके अलावा बाढड़ा की स्थिति हिसार–सतनाली–महेंद्रगढ़ और दिल्ली–दादरी–लोहारू राष्ट्रीय राजमार्ग के क्रॉसिंग पर अनुकूल थी। इसके आसपास के सभी 54 गाँव भी पक्की सड़कों द्वारा बाढड़ा से जुड़े हुए हैं।

इस चौराहे के आसपास ही सभी दुकानें और अन्य गतिविधियां हैं। 1980 के दशक से नलकूप सिंचाई के बाद गेहूं, सरसों और कपास की नई फसलों ने किसानों और अन्य लोगों की आय बढ़ाने में मदद की है। चरखी दादरी नया जिला बनने के बाद, बाढड़ा को 2018 में एक ब्लॉक से सब–डिवीजन में अपग्रेड किया गया था और पिछले साल इसे नगर समिति (एमसी) के रूप में अधिसूचित किया गया था, जिसका श्रेय मौजूदा विधायक को जाता है, जो डिप्टी सीएम हरियाणा की मां है। भविष्य में, सरकार क्षेत्र के युवाओं को रोजगार योग्य बनाने के लिए एक औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, रोजगार पैदा करने के लिए एक औद्योगिक एस्टेट और स्थानीय सेवानिवृत्त लोगों के पुनर्वास के लिए एक आवासीय क्षेत्र स्थापित कर सकती है। नगर समिति के रूप में घोषणा के बाद वाणिज्यिक और आवास के लिए भूमि लेनदेन गतिविधियां बढ़ रही हैं और आने वाले समय में बाढड़ा हरियाणा और राजस्थान की सीमा के पास एक महत्वपूर्ण शहर बन सकता है।

राजस्थान के किसान आन्दोलनों की पृष्ठभूमि (भाग-एक)

– डॉ0 धर्मचन्द्र विद्यालंकार

आज हम यहाँ पर अपने इस निबन्ध में राजस्थान में होने वाले किसान-आन्दोलनों की पृष्ठभूमि और उनकी प्रक्रिया एवं परिणामों पर भी चिन्तन करना चाहेंगें। यहाँ पर सर्वप्रथम यह समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है कि पराधीनता काल में भारत में दो प्रकार के देश थे। एक बिट्रिश इंडिया और दूसरा नेटिव इंडिया। बिट्रिश इंडिया या भारत वही कहलाता था, जिसमें अंग्रेजी साम्राज्य का प्रत्यक्ष शासन था और देशी भारत वही था, जिसमें कि देशी राजा और नबाव लोग शासन किया करते थे। इसी प्रकार से कृषि-भूमि के वितरण में भी यही द्वैध भाव विद्यामान था। वह तो मुगलकालीन शासन से ही चला आ रहा था। जो कृषिभूमि सीधी राज्य के अधीन थी, या जिसका भूराजस्व राजा स्वयं वसूल करता था; वही खालसा भूमि कहलाती थी। और जिसका लगान वे भूसामन्त लोग उगाया करते थे, वही जागीर या ठिकाने भी कहे जाया करते थे।

जो ग्रामीण कृषक-जनता सीधे राजा या राज्य के अधीन थी, उस पर इतना भूराजस्व का कर भार नहीं था। विशेषकर बिट्रिश-साम्राज्य के अधीन आने वाले किसानों से वर्षभर में एक या दो बार ही नकद भूमि का लगान लिया जा करता था। क्योंकि वहाँ पर स्थायी भूमि-बन्दोबस्त हो चुका था। अतएव वहाँ की कृषक-प्रजा अपेक्षाकृत शान्त और सुखी थी थी। लेकिन बिट्रिश साम्राज्यवाद ने अपनी जो भी उद्योग सम्बन्धी नीतियाँ बनाई थी, उनके ही कारण स्वरूप भारत के नगरों और गाँवों के कितने ही श्रमिक और कामगार अथवा मिस्त्री बेरोजगार हो गए थे। क्योंकि कपड़े की बडी-बडी मिलें लगने से जुलाहे तो चीनी-मिट्टी के बर्तन बनने से भारतीय कुम्हार तो कम्पनी के चमकदार जूतों के सम्मुख गाँव के मोची के खुरदरे जूते भला प्रतिस्पर्द्धा में कैसे टिक सकते था। अतएव भारी या बडे स्तर पर उद्योगीकरण के कारण ही भारत का लघु एवं कुटीर घरेलू उद्योग औंधे मुँह गिरा था। परिणामस्वरूप बेकार श्रमिक भी कृषि पर अवलम्बित हो गये थे।

(क) किसान-आन्दोलनों की पृष्ठभूमिः

इसी कारण कृषि-व्यवस्था पर अतिरिक्त श्रम-शक्ति का बोझ भी तो बढ चला था। दूसरे, अंग्रेजी राज्य-क्षेत्रों में एक व्यवस्थित विधि एवं न्याय-व्यवस्था भी थी ही; ताकि किसान लोग आपसी विवादों के निपटारे के लिए वहाँ पर जाकर न्याय पा सकते थे। और तो क्या, सरकार के विरुद्ध भी वे अपनी अपील और दलील रख सकते थे। जबकि देशी रियासतों और ठिकानों में ऐसी कोई न्याय की व्यवस्था कहाँ थी। क्योंकि वहाँ पर तो एकाधिकारी राजतन्त्रीय शासन-व्यवस्था ही थी; अतएव सारे ही कार्यपालिका एवं न्याय-पालिका तथा विधायिका सम्बन्धी अधिकार अकेले जन्मजात शासकों के ही पास संचित थे। इसीलिए वे किसी के प्रति उत्तरदायी भी कहाँ थे। अतएव वहीं पर दारूण-दमन और शोषण भी था।

जबकि विदेशी साम्राज्यवादी शासन-व्यवस्था में तथापि वायसराय की कौंसिलें विधान-निर्माण हेतु स्थापित हो चुकी थी। बल्कि 'एक्ट-ऑफ इंडिया' १९३५ के अर्न्तगत तो विधिवत् रूप से विधान-मंडलों का भी गठन बिट्रिश भारत में हो चुका था। अतएव इस आधार पर विदेशी पूँजीवादी साम्राज्यवाद भारतीय देशी सामन्तवाद से कहीं अधिक न्याय प्रिय और विधि विधान निष्ठ तथा प्रगतिशील और उत्तरदायी भी था। जब १८१८ ईस्वी में बिट्रिश-साम्राज्य ने राजस्थान के देशी नरेशों के साथ एक सन्धि की थी; तभी थोडा-बहुत हस्तक्षेप उसका देशी रजवाड़ों में भी बढ सका था। वरना जहाँ पर अंग्रेजों का प्रत्यक्ष शासन-प्रशासन था; वहाँ पर कमिश्नरी-व्यवस्था विद्यमान थी। और जहाँ पर देशी सामन्तों की रिसायतें थी; वहाँ पर उन्होंने अपने रेजीडैंट अथवा एक प्रकार से सह शासक ही बिठा रखे थे जोकि देशी नरेशों और सामन्तों पर भी कुछ कानून सम्बन्धी अंकुश रखने भी लगे थे।

दूसरी ओर जो स्वतन्त्रता का आन्दोलन राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व में लडा जा रहा था; उसकी नीति भी पहले-पहले देशी भारतीय राज्यों की राज्यव्यवस्था में हस्तक्षेप करने की सीधे नहीं थी। फिर भी प्रजा परिषद् और लोक परिषदों अथवा प्रजा-मण्डलों को उसका समर्थन था ही था। विदेशी ब्रिटिश सरकार से संघर्षरत राष्ट्रीय कांग्रेस देशी शासकों का भी समर्थन स्वतन्त्रता-आन्दोलन में चाहती थी। हालांकि वह असंभव ही था।

(ख) शासकों में जनसंपर्क का अभाव था।

बड़ी-बड़ी और सुसम्पन्न रियासतों के राजकुमार तो विलायत के विश्वविद्यालयों में भी शिक्षा पाने के लिए जाने लगे थे। जिनकी शिक्षा पर ही ही लाखों रूपयों का प्रतिवर्ष का व्यय होता ही था, उसको भी नितान्त निरीह कृषक प्रजा बेचारी उठाती ही थी। यही क्यों, उन राजाओं के नौनिहालों ने अंग्रेजी या पाश्चात्य जीवन-शैली भी अपना ही ली थी जोकि भोग-विलासपूर्ण एवं प्रदर्शन-प्रधान भी थी। अतएव वे मँहगे-मँहगे परिधान धारण करने लगे थे। जिनकी धुलाई भी पेरिस जैसे विदेशी नगरों से होकर आती थी। मंहगे और बहुमूल्य वाले हीरे-मोतियों के मुकुट और हार भी वे राजसी परिवार के सदस्य धारण करते ही थे। यही नहीं, मंहगी-मंहगी रॉयल रायस या शेवरलैट जैसी कारें भी वे खरीदने लगे थे। राजकुमारों में आपस में इस विषय में प्रतियोगिता सी भी होने लगी थी। वे घुडसवारी और पोलो जैसे मंहगे खेलों का भी शौक फरमाया करते थे।

इतना ही क्यों, अंग्रेजी उच्चअधिकारियों की देखादेखी वे भव्य भवन भी तो अपने आवासों के लिए नये-नये नगर बसाकर उनमें बनवाने लगे थे। यथा भरतपुर नरेश ने यदि 'मोती-महल' बनवाया था तो जयपुर नरेश ने 'हवा-महल' का नूतन निर्माण कराया था। तो मंडौर या जोधपुर नरेश ने 'उमेद-विलास' जैसा विशालतम भव्य भवन बनवाया था। इसी प्रकार से चित्तौड के राजा ने भी अपना जल-महल 'फतेह-विलास' बिहार बनवाया था। फिर ऐसे ही अपने लिए वे दिल्ली और आबू-पर्वत या फिर शिमला-मंसूरी तथा नैनीताल और दार्जलिंग जैसे पर्वतीय पर्यटक स्थलों और स्वास्थ्यवर्धक स्थानों पर भी अपने लिए विलास-बिहारों का नवनिर्माण करा ही रहे थे। इस प्रकार से भोग-विलास पूर्ण जीवन-शैली अपनाने के ही कारण वे भारतीय जनजीवन से भी तो कटते ही चले जा रहे थे। मंहगी-मंहगी विदेशी विलायती शराबों का भी वे सेवन किया करते थे। जब स्वदेशी का आंदोलन 1906 ईस्वी में लॉर्ड कर्जन के बंग-भंग की प्रतिक्रियास्वरूप आरंभ हुआ था; तब कुछ स्वराजी और गाँधीवादी नरेशों ने अवश्य ही विलायती बहुमूल्य सुरा-सेवन के स्थान पर देशी ढर्रे का ही सेवन किया था। यह भी उनका महान त्याग ही था।

(ग) किसान आन्दोलनों के प्रेरक-तत्त्व?

जैसाकि हम पूर्व में भी निवेदन कर चुके हैं कि बिट्रिश भारत की बजाय देशी राज्यों में एकतांत्रिक और निरकुंश राज-व्यवस्था ही कायम थी। अतएव वहाँ के राजा और सामन्त मनमानी मदों पर किसानों से भूमि की लगान वसूली किया करते थे। फिर वह भी वर्ष में एक दो बार नहीं अपितु सैकड़ों प्रकार की लाग-बाग उन्होंने किसानों के ऊपर लगा रखी थी। जैसेकि 'कुंवर-जी का कलेवा' ओर उसकी 'तलवार बधाई'। 'चियावन से लेकर बिहावान और 'गूदडा टैक्स' से लेकर विघोडी' जैसे ही नाना नामधारी निरर्थक और शोषणकारी कर व्यवस्था वहाँ पर अनवरत अबाध रूपेण जारी थी।

लॉर्ड वैलेजली ने जिस सहायक सैन्य-सन्धि का शिलान्यास अपने शासन-काल में किया था, तब तो भरतपुर जैसे देशी रजवाडे ने जमकर उसके विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष भी किया था। लेकिन अजमेर में जो सन्धि देशी राज्यों की बिट्रिश कम्पनी-सरकार के साथ हुई थी; तबसे तो सेना के संचालन एवं रख-रखाव का व्यय भार भी देशी नरेशों के सिर से कुछ कम हो गया था। अतएव वे और भी अधिक अनुत्तरदायी तथा भोग-विलासी एवं प्रदर्शन प्रिय भी हो गये थे। विदेशी की यात्राएँ कई-कई वर्षों तक करने लगे थे। जिस पर लाखों रुपयों का खर्च होता था, वह व्यय भार भी कृषि-व्यवस्था को ही वहन करना होता था। उद्योग और व्यापार वर्तमान काल की भाँति विकसित नहीं था।

इसी प्रकार से देशी नरेश एवं सामन्त अंग्रेजी शिक्षा भी पाने लगे थे। वे अपने राजकुमारों को या तो अजमेर के 'मेयो-रॉयल कालेज' में अध्ययन हेतु भेजते थे; जहाँ पर कि उन्हें सैनिक शिक्षा से लेकर शासन-प्रशासन तक की भी शिक्षा प्रदान की जाती थी। हिन्दी की सर्वप्रसिद्ध प्रथम कहानी उसने कहा था के रचनाकार पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी भी उसी मेयो कालेज में हिन्दी के प्रथम प्राध्यापक थे। इसी प्रकार से कलकत्ता के विलियम फोर्ट कॉलेज में भी हिन्दी के आदिम गद्यकार लल्लूलाल, सदल मिश्र और रानी केतकी के कथाकार इंसा अल्ला खाँ भी हिन्दी भाषा के वहाँ आरंभिक अध्यापक ही थे। अतएव जाने या अनजाने में ही सही कम से उच्च स्तर पर हिन्दी भाषा का अध्ययन आरंभ हुआ ही था।

(घ) राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की भूमिका:

अखिल भारतीय कांग्रेस के नेतृत्व में जो स्वाधीनता संग्राम बिट्रिश भारत में चल रहा था, उसका भी प्रभूत प्रभाव कहीं न कहीं, इन देशी भारत में चलने वो किसानान्दोलनों पर था ही। इस विषय में हम सर्वप्रथम और सर्वप्रमुखतम कि बिजौलिया के किसान आन्दोलन के सूत्रधार श्री भूपसिँह उपाख्य विजयसिँह 'पथिक' की पृष्ठभूमि का अवलोकन कर सकते हैं। वे दिल्ली में होने वाले हार्डिंग-बम-कांड में भी सम्मिलित थे। श्री 'शचीन्द्र सान्याल' के साथ उनको भी उस अभियोग में अभियुक्त बनाया गया था। अतएव उन्होंने अपना नाम और स्थान तक भी बदल लिया था। इस प्रकार से उस क्रान्तिकारी व्यक्ति ने छद्म नाम से ही बिजौलिया के किसानों में जाकर जनजागृति उत्पन्न की थी।

क्योंकि चित्तौड़(मेवाड) राज्य के ही अर्न्तगत बिजौलिया का वह ठिकाना आता था। वहाँ के भूसामन्त ने अनेकों अनुचित 'लाग-बाग' अपने किसानों के ऊपर आरोपित कर रखी थी। जब किसानों का एक प्रतिनिधिमण्डल इस विषय में उदयपुर नरेश से जाकर मिला था तो उस जागीरदार ने उन्हीं किसानों को देश-निर्वासन जैसा कठोरतम दण्ड़ दिया था। जब श्री विजय सिँह पथिक ने किसानों की मांग न मानने पर किसानों से एक वर्ष के लिए कृषि-कार्य ना करने का आह्वान कर दिया था, तो उस जागीरदार ने वहाँ लाकर उसी कृषि भूमि का आवंटन दूसरे किसानों को कर दिया था। और वे बेचारे धाकड़ किसान ही वर्तमान में गाडिया लुहार बनकर उदयपुर के चित्तौड राज्य के ही अर्न्तगत आने वाले बेगू के किसानों का नेतृत्व श्री रामनारायण चौधरी ने किया था। वहाँ पर तो श्री विजयसिँह पथिक को बाहरी हस्तक्षेपकर्त्ता मानकर उस राज्य ने उनके प्रवेश पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया था।

अतएव बिजौलिया से लेकर बेगू और शेखावाटी से लेकर मारवाड तक के सभी आन्दोलनों का आधारिक (बेस) कार्यालय अजमेर में ही उपस्थित था। क्योंकि वहाँ पर अंग्रेज कमीशनर जो बैठता था। इसीलिए वहाँ पर सभा-सम्मेलन करने और पत्र-प्रकाशित करने की भी स्वतंत्रता थी। तभी श्री विजयसिंह पथिक और रामनारायण चौधरी और जमनालाल बजाज जैसे कांग्रेसी तथा राजस्थान सेवा-संघ के कार्यकर्त्ताओं ने वहीं पर अपना केन्द्रीय कार्यालय भी स्थापित किया हुआ था। वहीं से वे तब 'राजस्थान-केसरी' नवीन राजस्थान' व 'तरुण राजस्थान' जैसे पत्र भी निकालते थे। क्योंकि अंग्रेजी राज्य-क्षेत्रों में ही बोलने और लिखने की स्वतन्त्रता सहज सुलभ थी जबकि देशी रजवाडों में प्रत्येक राजनीतिक गतिविधि पर पूर्णत: प्रतिबन्ध ही था।

(ङ) जातीय पंच-पंचायत संगठनों का महत्व:

जैसाकि यह सर्वविदित है कि बीसवीं शताब्दी शिक्षा और समाज-सुधार की ही थी। अतएव नई शिक्षा-दीक्षा पाकर सुशिक्षित नौजवान लोग अपने-अपने गाँवों और क्षेत्रों में शिक्षा का प्र्याप्त प्रचार और प्रसार भी कर रहे थे। विशेषकर राजस्थानी मरुभूमि में जहाँ पर कि गाँवों के मार्ग दुर्गम एवं दूरी पर थे; वहाँ पर जातीय शिक्षण-संस्थानों और छात्रावासों की भी व्यवस्था की जा रही थी। जैसीकि चौधरी बहादुर सिंह भोबिया ने संगरिया(हनुमानगढ) में ही पहले जाट-स्कूल की स्थापना की थी। बाद में स्वामी केशवानन्द जी ने उसको ग्राम उत्थान विद्यापीठ के रूप में पुष्पित और पल्लवित किया था। उस ग्रामोत्थान विद्यापीठ नामक शिक्षा-संस्थान की शाखाओं के रूप में गाँव-गाँव में सैंकड़ों विद्यालयों की स्थापना की गई थी। यदि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन से अभिभूत सेठ-साहूकार और नवसाक्षर सामन्त नगरों में ही अपने पूर्वजों के स्मारकों के रूप में ही सही; यदि शिक्षा-संस्थानों की स्थापना कर रहे थे तो किसान जातियों की सभाएँ वहाँ पर छात्रावासों की स्थापना में ही संलग्न थी।

इस प्रकार से जातीय पंच-पंचायतों और सभाओं का भी अनन्य अवदान अप्रत्यक्ष रूपेण ही सही, किसान-आन्दोलनों के पीछे या ही। क्योंकि नगर के विद्यालयों और कालेजों में पढने वाले छात्र ही आगे चलकर अपने क्षेत्रों में जाकर जननायक भी बने थे। इस विषय में बिजौलिया के किसान-आन्दोलन में यदि धाकड जातीय सभा के माध्यम से ही पहले वे किसान संगठित और सक्रिय हुए थे। तो उसी प्रकार से शेखावाटी से लेकर मारवाड(जोधपुर-संभाग) में भी जाट-जातीय सभाओं या पंचायतों की प्रबल प्रेरणास्पद भूमिका भी सराहनीय ही थी।

उदाहरण के रूप में पुष्कर मेले के अवसर पर होने वाली जाट-महासभा के मुख्यातिथि यदि भरतपुर नरेश श्रीकृष्ण सिँह थे तो उसके विशिष्ट अतिथि पंजाब के किसान मसीहा चौ० छोटूराम ही थे। जिन्होंने किसानों को अपने विद्यालय और छात्रावास स्थापित करने के ही साथ-साथ आर्थिक आधार पर किसानों के संगठन की आवश्यकता पर भी बल दिया था। उन्होंन उन्हें राजनीतिक रूप से भी सचेत किया था कि आगे जनतांत्रिक शासन की स्थापना होने वाली है। अत: उसमें पंजाब की भाँति किसानों की अग्रणी भूमिका भी होगी ही। सीकर (शेखावटी) में 1934 **में सम्पन्न होने वाले जाट महाप्रजापति यज्ञ में भी ठाकुर देसराज के साथ उनकी भी अग्रणी भूमिका थी।**

(च) सदीर्घ संघर्षों की फलश्रुति:

बाद में तो श्री बलदेव राम मिर्धा ने जोधपुर-राज्य के पुलिस अधीक्षक रहते हुए भी जाट-सभा और किसान सभा को भी अपना कुशल नेतृत्व प्रदान किया था। इसी प्रकार से शेखावाटी के किसान-आन्दोलन में भी जातीय सभाओं के नेताओं का योगदाम अमूल्य ही था। यथा, वहाँ पर ठाकुर देसराज और कुँवर रत्नसिँह और पन्ना सिँह लामरोड ने गाँव-गाँव में जाकर ही जनजागृति की ज्योति जलाई थी। ठाकुर देसराज ने भरतपुर के जघीना से चलकर शेखावटी को ही अपनी कर्मभूमि बनाया था। उन्होंने ही वहाँ पर एक किसान-सभा का भी संगठन खडा कराया था, जिसका सभापति या अध्यक्ष सरदार हरलाल सिँह खर्रा को ही बनाया गया था। जोकि आगे चलकर सम्पूर्ण राजस्थान की भी किसान-सभा के भी अध्यक्ष चुने गए थे। लेकिन जैसे ही राजस्थान का एकीकरण स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात ही हुआ था और 1952 ई० में प्रथम विधान सभाई चुनाव भी हुए थे, तो उस सर्वाधिक संघर्षशील कृषक नायक को नागरिक(शहरी कांग्रेसियों) ने एक ओर कर दिया था। जबकि उनकी किसान-सभा का विलय राष्ट्रीय कांग्रेस में पहले ही करा लिया गया था।

विडम्बना यह देखिए कि जो लोग दो-दो स्थानों से भी प्रथम विधानसभाई चुनाव में असफल रहे थे, वही सवर्ण शहरी लोग तदपि आगे चलकर राजस्थान के भाग्यविधाता बनाए गए थे।

इस प्रकार से सफलतापूर्वक सुदीर्घ समय तक चलने वाले किसान आन्दोलनों का संचालन एवं कुशलतापूर्वक नेतृत्व प्रदान करने वाले उन गाँव-देहात के कृषक केसरियों को प्रजा-परिषदों या प्रजामण्डलों में सक्रिय शहरी सवर्णों और सेठों ने सत्ता-प्राप्ति के पश्चात सदा-सदा के लिए बनवास ही दे दिया था। आज पर्यन्त भी उस सामन्ती सन्निपाती संस्कारों से सम्पन्न राजस्थान में अपना व्यापक जनाधार रहते हुए भी एक भी जाट-किसान कुलजन्मा किसान-केसरी को वहाँ की शक्तिपीठ पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका है। जबकि उन्हीं जाट-किसानों ने वहाँ पर सर्वप्रथम प्रादेशिक स्तर पर किसानों को एक व्यावसायिक वर्ग के आधार पर सुसंगठित करके उनमें प्रखर राजनीतिक जनचेतना का ही सुचारू संचार किया था।

राजस्थान के किसान आंदोलनों की प्रक्रिया और परिणाम

(क) राष्ट्रीय कांग्रेस की भूमिका:

जैसाकि हमने पहले यह बताया था कि अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की

रणनीति देशी राज्यों में अहस्तक्षेप वाली ही थी। इसके मुख्य कारण यह थे कि एक तो वह एक ही साथ विदेशी पूँजीवादी साम्राज्यवाद और देशी सामन्तवाद के साथ लडना नहीं चाहती थी। दूसरे देशी सामन्ती एकतन्त्रात्मक शासकों का अभी आधुनिकीकरण किंवा प्रजातांत्रीकरण हुआ ही कहाँ था। अतएव उनकी उस सामन्ती सन्निपाती संस्कारी वर्गदृष्टि में सत्याग्रह एवं अंहिसात्मक आन्दोलनों का कोई मूल्य ही कहाँ था। विचित्र विडम्बना यही थी कि वे लोग बिट्रिश साम्राज्य से तो अपने लिए अधिक से अधिक जनतांत्रिक अधिकारों की मांग अनवरत और अबाध रूपेण करते रहा करते थे लेकिन अपने-अपने राज्यों की प्रिय प्रजा को वे न बोलने की और न ही लिखने की किसी भी प्रकार की कोई आजादी देना नहीं चाहते थे।

पं0 नेहरू ही अकेले सारी राष्ट्रीय कांग्रेस में उस राजतान्त्रिक अथवा एकतांत्रिक राज्य-व्यवस्था के विकट विरोधी थे। लेकिन आरम्भ में उनका भी इतना प्रबल प्रभाव वहाँ पर कहाँ था। उदाहरण के लिए बिजौलिया का आन्दोलन श्री विजयसिंह पथिक 1915 **ई0 से ही चला रहे थे। जब** 1919 **ई0 में जलियावालां बाग के हत्याकांड के विरोध में उस वर्ष अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर (पंजाब) में रखा गया था तो श्री पथिक जी ने पहले दिन होने वाली कार्यसमिति की विचारणीय विषय-सूची में उस विषय को भी जुड़वाने का आग्रह महात्मा गाँधी जी से किया था। लेकिन जालौर-सिरोही की रियासतों के तत्कालीन दीवान श्री रमाकान्त या उमाकान्त मालवीय नामक दीवान ने अपने पूज्य पिता पं0 मदनमोहन से कहकर उस बिजौलिया के किसान आन्दोलन की आहट को तब अनसुना ही करा दिया था। इस बात का उद्घाटन उदयपुर राज्य के किसान-आन्दोलन नामक पुस्तक की लेखिका श्रीमति पद्मजा शर्मा ने अपनी उसी पुस्तक में किया है, जिसको श्रीमति मोनिका वोहरा ने सूरजमल शिक्षा संस्थान, दिल्ली की एक गोष्ठी उद्धृत किया था।**

(ख) राजस्थान सेवा-संघ की स्थापना:

इस प्रकार से देशी सामन्तवाद के साथ हिन्दू पुरोहितवाद का भी गठबन्धन स्पष्टतया था। महामना मालवीय जी ने देशी राजे-रजवाडों की आर्थिक सहायता लेकर ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। यही क्यों, 1925 ई० में भरतपुर के शासक श्री किशनसिंह से कहकर वहीं पर राष्ट्रीय हिन्दी-सम्मेलन भी संपन्न कराया था लेकिन वहाँ पर जो मन्त्री-परिषद् या वृद्ध कौंसिल पहले से राजा की परामर्शदात्री संस्था के रूप में कार्यरत थी; उसकी शिक्षा उन्होंने बैरिस्टर होते हुए भी अपने सभी देशी नरेशों को भूलकर भी नहीं दी थी। एक मुख्य विशेषता राजस्थान के लगभग सभी किसान-आन्दोलन की ये थी कि ये सभी जनतांत्रिक प्रवृति ही के थे। क्योंकि कहीं न कहीं महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय कांग्रेस के ही कार्यक्रमों से अनुप्राणित थे।

सर्वप्रथम 1918 ईस्वी में ही वर्धा में जमनालाल बजाज की कोठी पर ही राजस्थानी सेवा-संघ की स्थापना की गई थी। जिसके सदस्य लाला जी के अलावा श्री विजयसिंह पथिक और रामनारायण चौधरी भी थे। 1920 ई० में ही राजस्थान सेवा-संघ के कार्यालय को सुदूर दक्षिण से उठाकर इधर अजमेर में लाया गया था। क्योंकि वहाँ पर बिट्रिश शासन-प्रशासन होने के ही कारण कोई किसी प्रकार का प्रतिबंध आर्थिक और सामाजिक तथा राजनैतिक गतिविधियों पर नहीं था। अतएव सर्वप्रथम यहीं से 'राजस्थान सेवा-संघ' के तत्त्वाधान में श्री पथिक जी ने 'राजस्थान-केसरी' पत्र निकाला था। उसके बडे होने के पश्चात 'तरूण राजस्थान' और 'नवीन राजस्थान' जैसे प्रकाशित हुए थे। बिजौलिया के किसान-आंदोलन से लेकर बेगू और शेखावाटी तथा मारवाड तक के सभी किसान-आन्दोलनों एवं प्रजा-मण्डलों का भी केन्द्रीय कार्यालय एक प्रकार से अजमेर में ही था। क्योंकि इन नेताओं के प्रवेश पर देशी नरेशों ने प्रतिबंध भी लगा रखे थे। अतएव सारी राजनीतिक गतिविधियाँ वहीं से संचालित की जाया करती थीं। फिर संयोग से वही स्थान सम्पूर्ण राजस्थान के मध्य में भी स्थित था। फिर वहीं से चारों ओर आने जाने के लिए रेलमार्ग भी सुगम और सस्ता था।

(ग) बाहरी प्रेरणा और प्रभाव:

जैसाकि हमने पूर्व में भी निवेदन किया है कि उपर्युक्त सभी किसान-आन्दोलनों की गतिविधि अहिंसात्मक और जनतांत्रिक ही थी। वे पहले अनी जनसभाओं में समस्याओं पर चिन्तन किया करते थे। फिर उनके निदान सम्बन्धी सुझाव भी मांगे जाया करते थे। बाद में सर्वसहमति के साथ कुछ प्रस्ताव भी पारित किए जाते थे। फिर उनके निदान सम्बन्धी सुझाव भी मांगे जाया करते थे। बाद में सर्वसहमति के साथ कुछ प्रस्ताव भी पारित किए जाते थे। तभी शिष्टमण्डल के माध्यम से उनको सम्बन्धित ठिकानेदार या फिर उस रियासत के राजा के सामने ज्ञापनों को रखा जाता था। राजा लोग यदि ठिकानेदारों और किसान नेताओं के मध्य में कई बार सन्धि या समझौता भी करा दिए करते थे तथापि वे ठिकानेदार इतने निरंकुश थे कि वे उसके बावजूद भी समझौते की शर्तों का पालन नहीं किया करते थे। और किसानों को प्रतिक्रियास्वरूप कठोरदण्ड भी दिया जाया करता था। जैसाकि वेग के ठिकानेदार ने अपने यहाँ पर किया था। अंग्रेजी सैटलमैंट आफीसर मि० टेलर के सम्मुख ही किसानों को धोखे से बुलवाकर उनके ऊपर गोलियाँ चलवा दी थी। जिसमें मूला जी जाखड तथा एक और भी जाट-किसान शहीद हो गए थे।

इसी प्रकार से सीकर के ठिकानेदार कल्याण सिंह ने भी ऐसा ही दारूण दमन वहाँ के जाट किसानों पर किया था। जब 1934 **ई0 में वहाँ की जाट सभा और किसान-सभा ने संयुक्त रूप से एक जाट महाप्रजापति यज्ञ रचाकर उसमें यज्ञपोपवीत या जनेऊ धारण करने का सत्संकल्प आर्यसमाज की प्रबल प्रेरणा से किया था। उसमें मुख्यातिथि के रूप में से उत्तरभारत के तत्कालीन महान् किसान मसीहा दीनबन्धु चौ0 छोटूराम जी ही थे। किसान-सभा ने उनकी सवारी या शोभा-यात्रा हाथी पर निकालने का कार्यक्रम बनाया था, तो वहाँ के राजराजा कल्याणसिँह ने उस हाथी को ही रात्रि में चुरवा दिया था। ऐसी स्थिति में सरदार हरलाल जोकि शेखावाटी किसान सभाध्यक्ष थे..... उनके साथ ठाकुर देसराज और कुँवर रत्नसिंह तथा श्री पन्नालाल लामरोड तथा डॉ0 हरिसिँह ने जयपुर राज्य के अंग्रेज रैजीडैंट को ज्ञापन दिया था। तब उसी के आदेश पर पुनः हाथी उपलब्ध कराया गया था। अतएव देशी राजपूत राजा और सामन्त लोग किसानों या जाटों को सामाजिक समानता देने के पक्षधर नहीं थे। तभी वे हाथी-घोड़ों की सवारी नहीं कर सकते थे। ठाकुरों के सम्मुख चारपाई पर नहीं बैठ सकते थे। किसान महिलाऐं भी काँच के स्थान पर हाथीदाँत की चूड़ियाँ ही पहनती थी। जहाँ पर सामाजिक समता सुलभ न हो राजनीतिक आजादी वैसी स्थिति में भला कैसे मिल सकती थी।**

(घ) देशी पूँजीवाद ही प्रगतिशील भूमिका:

देशी सामन्तों और जागीरदारों की जीवन-शैली राजसी थी। अतएव विलासप्रिय ही थी। वे प्रतिवर्ष अपने लिए नये-नये भव्य भवनों का नवनिर्माण कराया करते थे, तो नई-नई और बहुमूल्य मर्सिडीज या रॉल्स-रॉयस अथवा शेवरले जैसी अंग्रेजी गाडियाँ भी अपने वैभव-प्रदर्शन के लिए खरीदा करते थे। कई-कई सौ तक नित्य नवेली रानियाँ अपने-अपने रनिवासों में वे रखते थे। जोधपुर नरेश के रनिवास में लगभग तीन-सौ रानियाँ थी तो पटियाला के राजा के यहाँ पर तो लगभग तीन सौ साठ के लगभग रूपसी रानियाँ थीं। अपने व्यक्तिगत भोग-विलास ओर ऐश्वर्य-प्रदर्शन से ही उन्हें अवकाश कहाँ था। अतएव उनका इतना ध्यान अपनी प्रजा के कल्याणार्थ स्कूल और औषधालय खुलवाने पर उतना कहाँ था। जबकि विदेशी बिट्रिश सरकार गाँव-गाँव में लगभग चारों ही ओर रेलों का भी संजाल बिछवा दिया था जोकि उनकी सभी छावनियों को एक दूसरे से जोडता था।

इसके विपरीत उदयपुर के राणा प्रतिवर्ष अपने पूर्वजों का पिण्डदान करके हाथी पर सवार होकर लगभग तीन सप्ताह में भरतपुर की दूसरी राजधानी डीग पहुँचा करते थे। तब वहीं विश्राम करके दो दिनों के बाद मथुरा के स्टेशन से ही गया जी में रेलमार्ग से ही पहुँचा करते थे। वे कोटा-बम्बई मार्ग से आगे चित्तौड और उदयपुर तक रेल-मार्ग के निर्माण का व्ययभार भी उठाने को उद्यत नहीं थे। इस प्रकार से अपने लिए सभी प्रकार की सुख-सामग्रियों का सञ्चय करके भी जनकल्याण की कोई भी कलित कामना देशी नरेशों के मन में कहाँ थी।

बल्कि इसके विपरीत जो राष्ट्रवादी देशी पूँजीवाद था, वह फिर भी अपने पूज्य पूर्वजों के नाम से ही सही, स्कूल और कॉलेज तो खुलवा ही रहा था। यथा, शेखावाटी के ही झुन्झनूँ के पिलानी नगर में जुगलकिशोर बिडला ने अपनी पृथक् शिक्षा-समिति बना रखी थी। जोकि पूरे झुन्झनूँ-चिडावा से लेकर के तत्कालीन पंजाब की जींद रियासत के लोहारू-सतनाली और भिवानी से लेकर चरखी-दादरी तक के गाँवों में अपने स्कूल चलाती थी। उनमें अंग्रेज सरकार द्वारा दण्डित या निर्वासित स्वतंत्रता सेनानियों को शिक्षक के रूप में भी रखा जाया करता था। वर्तमान हरयाणा के पं० भगवतदयाल शर्मा और बाबू बनारसीदास गुप्ता वहीं पर अध्यापक थे। भिवानी जिले से जितने जननायक बाद में निकले थे, वे सभी वहीं पर पढ़े थे। जिनमें बहन चन्द्रावती से लेकर चौ० बंसीलाल तक भी शामिल थे। श्री निहाल सिंह तक्षक भागी निवासी भी वहीं पर अध्यापक थे जोकि बाद में पटियाला सरकार की सरकार में मंत्री भी रहे थे।

(ङ) सामाजिक-संगठनों की पृष्ठभूमि:

देशी सामन्तों और जागीरदारों का व्यवहार किसानों के साथ शोषणमूलक और अमानवीय था। वे मनमानी माप-तोल से खडी फसलों की कुताई करके उनके ऊपर सैंकडों प्रकार की अतिरिक्त लाग-बाग भी भूराजस्व के अलावा आरोपित किया करते थे। जिनकों नहीं भर पाने पर क्रूरतापूर्ण दण्डात्मक कार्यवाही भी उनके ऊपर की जाया करती थी। क्योंकि ठिकानदारों अथवा भौमियाओं के पास लठैत और बंदूकधारी गुण्डों के रूप में कारिन्दे भी रहा करते थे। सीकर के कटास्थल में तो किसान महिलाएँ तक किसान-आन्दोलन में दसियों हजार

की संख्या में आ गई थी। जिनका नेतृत्व किसान नेता सरदार हरलाल खर्रा की धर्मपत्नी किशोरी देवी और ठाकुर देसराज की पत्नी ने भी किया था तो उन्हीं के साथ एक ब्राह्मणी भी थी। यहाँ पर यह भी ज्ञातव्य है कि देशी रजवाडों में किसान-सभा बनाने पर प्रतिबंध था, लेकिन जातीय संगठनों पर किसी प्रकार की कोई पाबन्दी नहीं थी। अतएव जाट-सभा, शेखावाटी और मारवाड जाट-सभा के नाम से भी किसान-सभाएँ संघर्षरत थी। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह भी है कि यदि शेखावाटी की जाट-सभा(किसान-सभा) के अध्यक्ष यदि सरदार हरलाल सिंह (जाट किसान) थे तो उसके महामन्त्री एक ब्राह्मण ताडकेश्वर शर्मा ही थे। मा० चन्द्रभान और हनुमान व मेघराज आर्य भी सक्रिय थे।

इसी प्रकार से जब स्वतंत्रता के सूर्योदय के वर्ष में ही डीडवाना (नागौर) के डाबडा नामक गाँव में जब मोतीलाल जीवनराम नामक जाट किसान के घर पर किसान-सभा का सम्मेलन हो रहा था तो तब वहाँ के ठिकानेदार ने उन निहत्थे किसानों पर निर्ममतापूर्वक एकाएक ही गोलियों की बौछार करा दी थी। जिसमें लगभग 14-15 किसान शहीद कर दिए गये थे। उनमें से वहाँ की किसान सभा के एक नेता भी शामिल थे। इसी प्रकार से सीकर और झुन्झनूँ के सरावग और कूदना तथा गोठढा और खूम्बी जैसे गाँवों में जागीरदारों के गुंडों ने कई-कई किसानों को मौत के घाट उतार दिया था।

बिजौलिया और वेगू तथा मारवाड और शेखावाटी तक के सभी उक्त किसान-आन्दोलनों की एक सामान्य विशेषता यह थी कि इन सभी में जाट-किसानों की संख्या शहीद होने और संघर्ष करने में भी सर्वाधिक ही थी। बल्कि बीकानेर राज्य के अन्तर्गत चलने वाले किसान-आन्दोलन में भी जटसिख किसानों की भूमिका अग्रणी ही थी। उनके नायक सरदार करतार सिंह थे। तो सरदार दरबारा सिंह को बीकानेर के राजा ने हाथी से बाँधकर मीलों खिँचवाया था। बाद में स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात वही पंजाब के मुख्यमंत्री भी बने थे। सरदार ज्ञानी जैलसिंह भी उनके साथ दण्डित किये गये थे। वे भी बाद में भारतीय गणतंत्र के राष्ट्रपति भी बने थे।

राष्ट्रीय कांग्रेस के महामन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने अपनी एक अलग 'इण्ड़िया इन्डेपैडेंस लीग' बना रखी थी। अतएव 1920 के असहयोग-आन्दोलन की सफलता से उत्साहित होकर ही उन्होंने देशी रजवाडों के कांग्रेसियों को अपनी उपर्यक्त संस्था से जोड लिया था। वैसे भी यह एक भूमिगत रहकर कार्य करने वाला ही संगठन था। इसी की शाखाओं के रूप में देशी रियासतों में भी प्रजा-परिषदें या प्रजा-मण्ड़लों का गठन शहरी नागरिकों ने कर लिया था। इनके आन्दोलन भी राजपूताना के प्रत्येक राज्य में उत्तरदायी शासन के लिए अहिंसात्मक रूप से ही सक्रिय थे। लेकिन गाँव-देहात तक इनकी कोई पहुँच और पैंठ तथा पहचान भी नहीं थी। अतएव किसान-आन्दोलनों के माध्यम से लगातार जुडती चली जा रही ग्रामीण कृषक जनता के साथ बाद में ये लोग भी आ ही जुडे थे। जोधपुर के मारवाड राज्य में श्री जयनारायण व्यास सक्रिय थे, तो गोकुलभाई भट्ट जैसे लोग जालौर-सिरोही राज्य में ही उत्तरदायी शासन के लिए संघर्षरत थे। जमनालाल बजाज जैसे राष्ट्रीय सेठ इन सभी को अपना आर्थिक सहयोग दे ही रहे थे।

बाद में जैसे ही अंग्रेजों के अधीन भारत को जब 1947 ईस्वी में स्वतंत्रता मिली थी तो उसी के साथ-साथ ये देशी रियासतें भी स्वतंत्र कर दी गईं थी। लेकिन अंग्रेज सरकार ने इन्हें दोनों ही राष्ट्र-संघों भारत और पाकिस्तान में मिलने की आजादी प्रदान कर दी थी। उसी वैकल्पिक प्रावधान का लाभ उठाकर जैसलमेर और जोधपुर जेसे राज्यों के शासक पाकिस्तानी राष्ट्र संघ में सम्मिलित होने के लिए आतुर थे। उस समय राजस्थान के एकीकरण में प्रजा-परिषदों या मण्ड़लों के आंदोलनों और इनके नेताओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही थी। अतएव किसान आन्दोलनों और उन्हीं के समानान्तर राजनीतिक स्वतंत्रता की संप्राप्ति के लिए चलने वाले उपर्युक्त आन्दोलनों ने एक अखण्ड़ राष्ट्र की भारत राष्ट्र की अवधारणा को ही मजबूत किया था। इस प्रकार से राजस्थान के एकीकरण के ही साथ भारतीय राष्ट्र का भी एकीकरण स्वत: ही संभव हो पाया था।

लेकिन विचित्र बिड़म्बना यही है कि जिन कृषक-केसरियों ने अपनी आर्थिक एवं सामाजिक स्वतंत्रता पाने के लिए सर्वाधिक सुदीर्घ संघर्ष किया था और सर्वाधिक संख्या में बलिदान भी दिए थे; उसी राजस्थान की बहुसंख्यक जाट जाति के किसान-केहरियों को बाद में चतुर-चंट शहरी और स्वर्ण नेताओं ने सत्ता की सीढ़ियों से धकियाकर पीछे और नीचे धकेल दिया था। यहाँ पर उर्दू का यह शेर मौजूद है-

''वतन की राह में सभी बिस्मिल और जफ़र न थे,
मंजिल उन्हीं को मिली जो शरीके-सफ़र न थे।''

वैवाहिक विज्ञापन

- *Suitable match for Jat Girl (DOB 02.09.90) 31/5'5" MBA in International Business from P.U. Chandigarh. Employed as Deputy Collector in Irrigation Department, Haryana in Head office Panchkula. Avoid Gotras:Kadyan, Hooda. Contact: 9468269712, 9991996899*
- *Suitable match for Jat Girl (DOB 16.05.96) 25/4" Master in Economics from P. U. Chandigarh. Lives in Canada. Brother settled in Canada. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras:Malik, Chahal. Contact: 9466611197*
- *Suitable match for Jat Girl (DOB 04.07.94) 27/5'4" B. Com, M.Com. from MDU Rohtak, B.Ed from Kurukshetra University. Avoid Gotras:Lamba, Sheokand, Beniwal. Contact: 9416234470*
- *Suitable match for Jat Girl (DOB 09.08.89) 32/5'5" BDS from P. U. Chandigarh. MPH from PGI Chandigarh. Working as Associate Project Co-ordinator with WHPE (USAID) Delhi/Noida (CTBD-MoH &FW). Salary package Rs. 9-10 lakh. Father retired officer from Central government. Mother homemaker. Elder brother Engineer in USA. Preferred Doctor, Engineer, Govt. officer, Professor, Bank Officer. Avoid Gotras:Dahiya, Khatri, Tehlan. Contact: 9041857505 (Whatsapp), 9888950503*
- *Suitable match for Jat Girl (DOB 09.11.94) 27/5'4" B.Sc. Math, B.Ed. Avoid Gotras:Kaliraman, Jani, Pawar. Contact: 9416083928*
- *Suitable match for Jat Girl (DOB 22.05.91) 30/5'3" B. Tech, M.Tech (Mechanical Engineering) from GJU Hisar. M. Tech. Gold Medalist. Pursuing P.hD in Thermal Engineering from N.I.T. Kurukshetra. Getting scholarship. Father in Government job. Mother Government teacher. Avoid Gotras:Sandhu, Siwach, Gill and direct Sheoran. Contact: 9466965902, 9813366793*
- *Suitable match for Jat Girl (DOB 13.08.94) 27/5'1" MA (Economics), MA (English), P.G. Diploma in Computer Science from HARTRON. Working as Lecturer in a reputed private school in District Kaithal. Avoid Gotras:Jaglan, Singhmar, Beniwal. Contact: 9780580317*
- *Suitable match for Jat Girl (DOB 04.12.90) 31/5'2" BCA, MCA. Working in MNC Gurugram with package Rs. 7 lakh PA. Avoid Gotras:Gulia, Malhan, Dalal. Contact: 9780385939*
- *Suitable match for Jat Girl (DOB 01.05.96) 25/5'6" Bachelor of Dental Surgery. Working as Drug Safety Associate in Paraxel International, Mohali (Punjab). Father in Govt. job in Chandigarh. Mother housewife. Avoid Gotras:Khokkhar, Saroha, Sehrawat.Contact: 9872845123*
- *Suitable match for Jat Girl (DOB October 86) 35/5'5" MSc. Geography from Kurukshetra University. M. Phil, PhD., NET and JRF qualified. Employed as Assistant Professor in Kurukshetra University. Avoid Gotras:Panghal, Dalal, Sangwan. Contact: 9646404899*
- *Suitable match for convent educated Jat Girl (DOB 1995) 26/5'2" B. Tech.from PEC Chandigarh. Working in MNC. Avoid*

Gotras:Jaglan, Rathi. Contact: 9417133975, 7889278091

- Suitable Match for Jat Girl (DOB 13.10.91) 29/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM in Criminal Law, Diploma in Labour Law, Diploma in Administrative Law, Ph.D in International law. Employed in Education Department, Haryana. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Contact: 9417333298
- Suitable match for Jat Girl (DOB 01.01.90) 31/5'2" Master in Pharmacy. Employed as teacher in Diploma College. Father retired from HES-II, Mother housewife. Avoid Gotras: Goyat, Dhankhar, Balhara, Kadyan. Contact: 9996956282
- Suitable match for Jat Girl (DOB 25.01. 97) 24/5'6" M.Sc. (Chemistry) B.Ed. Avoid Gotras: Khatkar, Sheoran, Sohlat, Thakan. Contact: 9888518198
- Suitable match for Jat Boy (DOB 25.12.94) 27/5'8" B.A. LLB from P.U. Chandigarh. Father retired HAS II. Avoid Gotras:Balyan, Deswal, Pannu, direct Duhan, Ahlawat. Contact: 9216886705, 7355555667
- Suitable match for Jat Boy (DOB 06.04.87) 35/5'8" B.Tech. (ECEl) from Kurukshetra University. MS Computer Forensic & Cyber Security from George Mason University USA. Settled in USA Engineer. Employed with DELL SECURES (USA-CHICAGO). Excellent pay Package/financially well off. Father retired officer from Central Government. Mother homemaker. Preferred Doctor (MBBS), Engineer (CSE) from reputed Institute. Available in India for one month. Avoid Gotras:Dahiya, Khatri, Tehlan Contact: 9041857505 (Whatsapp) , 9888950503
- Suitable match for Jat Boy (DOB 03.10.90) 31/6'1" B.Tech. (Mechanical) from LPU Jalandhar. Working as Senior Auditor in C &AG, CGL Banglore. Father retired Hon SM, now working as an Admin Officer in Mankind Pharma. Mother housewife. Avoid Gotras:Dhankhar, Sangwan, Suhag. Contact: 9805967450, 8219949508
- Suitable match for Jat Boy (DOB 02.07.93) 28/5'3" B.Tech. (Mechanical) from Kurukshetra University. Working in MNC Gurugram with Rs. 8 lakh package PA. Avoid Gotras:Bamal, Dhankhar, Sesma. Contact: 9728481938
- Suitable match for Jat Boy (DOB 05.10.93) 28/5'7" B.Sc Computer Science from Punjab University Chandigarh. B.Ed from MDU Rohtak. Childhood Education Program from Canada. Settled and working in Manstreal Canada. Father retired Police Inspector Chandigarh. Mother housewife. Avoid Gotras:Lohchab, Hooda. Contact: 9877640592, 8146991568
- Suitable match for Jat Boy (DOB 02.09.90) 31/5'8" B. Tech in Computer Science. Own business of Civil Contractor. Income 35-40 lakh PA. Family settled at Panchkula. Father retired from Indian Railway. Mother housewife. Avoid Gotras: Hooda, Jaglan. Contact: 8288886399, 9041767693
- Suitable match for Jat Boy (DOB 23. 07. 93) 28/5'11" B. Tech in Mechanical Engineering from UIET, P.U. Chandigarh. Preparing for Civil service. Father passed away. Mother housewife. Avoid Gotras: Barak, Tomar, Dhariwal. Contact: 9779265727
- Suitable match for Jat Boy (DOB 06. 11. 98) 23/5'9" B. Com. Own business of Mobile in Chandigarh. Avoid Gotras: Barak, Dalal, Kadyan. Contact: 8146229865
- Suitable match for Manglik Jat Boy 30/5'11" B.A. Business of Footwear. Family settled in own house at Zirakpur. One year diploma in Computer. Avoid Gotras: Kharb, Narwal, Ravish. Contact: 7508128129
- Suitable match for Jat Boy (DOB 06.01.91)30/5'8" B.Tech.inAuto Mobile Engineering. Master from University of South Florida F.L. (U.S.A.) Worked in California as Business Analyst. Now working in Gurugram as Business Analyst. Father Deputy Excise and Taxation Commissioner in Haryana government. Mother housewife. Avoid Gotras:Sheoran, Sehrawat, Kharb. Contact:7217602068
- Suitable match for divorcee issueless Jat Boy (DOB 87) 34/6 feet Own business. Ten acre agriculture land, earning Rs. 12 lakh PA. Widow acceptable. Avoid Gotras: Pawar, Chahal, Ghanghus. Contact:8837619762
- Suitable match for Jat Boy (DOB 26.05.94) 27/6'3" B.Teh (Mechanical) and Auto Cat Mechanical. Settled in Canada. Father in Haryana Government service and mother Government Teacher. Avoid Gotras: Shyan, Punia, Duhan. Contact:9417303470, 9416877531
- Suitable match for convent educated Jat Boy 30/6'1". Employed as officer in Government job in Australia and own house in Australia. Father and Mother retired class-II officers from Haryana Government. Family settled at Yamuna Nagar. Avoid Gotras: Sheoran, Chahal, Dhanda. Contact: 9518680167, 9416036007
- Suitable match for Jat Boy (DOB15.08.93)28/6'2" Employed in Government job at Chandigarh. Family settled in Chandigarh. Father in Government job. Mother housewife. Avoid Gotras:Punia, Mann, Sheoran, Phor. Contact: 9466217701
- Suitable match for Jat Boy (DOB 01.03.93) 28/5'11" B.A., LLB, LLM Working as Legal Consultant in Law Firm at Chandigarh with Rs. 30000 PM. Father Class-I officer retired. Mother housewife. Family residence at Panchkula and Sonepat. Avoid Gotras: Malik, Jhanjharia. Contact: 9876155702
- Suitable match for Divorced Jat Boy having one daughter, (DOB 09.08.85) 36/6 feet. Plus two passed. Agriculturist. Avoid Gotras: Pawar, Chahal, Ghanaghas. Contact: 9317958900
- Suitable match for Jat Boy (DOB 10.08.88) 32/5'9" B.Tech. (Mechanical). Working as Training Officer, GITOT Rohtak. Avoid Gotras: Kharb, Rathi, Khatri. Contact: 9416152842
- Suitable match for Jat Boy (DOB 27.04.89)31/5'10" B.Tech.in Bio-Medical Engineering. Working in a reputed Master's Medical Company with package of Rs. 16.5 lakh PA. Father businessman. Mother housewife. Avoid Gotras:Jatyan, Duhan, Dagar. Contact:9818724242
- Suitable match for Jat Boy (DOB 18.10.90) 31/6'1" B. Tech from P. U. Chandigarh (UIET). Employed as Inspector CBI. Father retired class-I officer. Mother housewife. Elder brother in Government job. Eleven acre agriculture land. Family settled at Zirakpur. Preferred working match in Centre/State Govt. job. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal. Contact: 9023492179, 7837551914

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। बिल्ड़िग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्ड़िंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्री निवास स्थल पर ब्लॉक विकास एवं पंचायत अधिकारी (बी.डी.पी.ओ.) कटरा द्वारा सरकारी खर्चे से दो महिला एवं पुरूष स्नानघर व शौचालय का निर्माण किया जा चुका है और पानी के कनैक्शन के लिये भी सरकारी कोष से फंड मंजूर हो गया है और शीघ्र ही पानी की आपूर्ति का कनैक्शन चालू हो जायेगा।

जाट सभा द्वारा यात्री निवास भवन का निर्माण कार्य शीघ्र शुरू करने का प्रयास था लेकिन कोविड़-19 महामारी के कारण निर्माण कार्य शुरू नहीं किया जा सका और इस महामारी का जाट सभा की वित्तीय स्थिति पर भी प्रभाव पड़ा है। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला यात्री निवास भवन का निर्माण करने पर वचनबद्ध है और शीघ्र ही निर्माण शरू कर दिया जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला जीन्द (हरियाणा), वर्तमान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111/- तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426-427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह निवासी मकान न0 990, सैक्टर-3, कुरूक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा, चण्डीगढ को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड-एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : 0172–2654932, 2641127, 8968108266

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।